गरवी गुजरात

PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 042
दि. 11.06.2026,
गुरुवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

सशक्त अन्नदाता, समृद्ध कृषि

गुजरात सरकार

₹1.40 लाख करोड़ का कृषि बजट, 12 वर्षों में हुआ **5 गुना**

राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन और परंपरागत कृषि विकास योजना से करीब **28 लाख हेक्टेयर कवर**, जिससे **जैविक खेती को बल**

12 साल *विश्वास के, विकास के, जनकल्याण के*

"आदरणीय प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में डबल इंजन सरकार का कृषि विकास मॉडल, अन्नदाता किसानों को समृद्ध और सशक्त बनाते हुए 'विकसित गुजरात से विकसित भारत' के निर्माण की मजबूत गारंटी बन रहा है।"

- श्री हर्ष संघवी, माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात

लोकतंत्र की लंबी यात्रा में नया अध्याय, लगातार जनादेश के शिखर पर पहुंचे नरेंद्र मोदी

नई दिल्ली। भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में कुछ अवसर केवल राजनीतिक उपलब्धियां नहीं होते, बल्कि वे एक युग की पहचान बन जाते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के सबसे लंबे समय तक लगातार निर्वाचित प्रधानमंत्री रहने का रिकॉर्ड अपने नाम दर्ज कराकर ऐसा ही एक नया अध्याय लिख दिया है। यह उपलब्धि केवल किसी व्यक्ति या राजनीतिक दल की सफलता का प्रतीक नहीं मानी जा रही, बल्कि इसे स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में देखा जा रहा है। इस रिकॉर्ड के साथ प्रधानमंत्री मोदी ने देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के उस ऐतिहासिक आंकड़े को पीछे छोड़ दिया है, जो दशकों तक भारतीय राजनीति में एक अप्रतिम मानक के रूप में कायम रहा। भारत की राजनीतिक यात्रा में यह क्षण इसलिए भी विशेष माना जा रहा है क्योंकि देश की जनता ने लगातार तीन आम चुनावों में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व पर भरोसा जताया है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में किसी भी नेता के लिए लंबे समय तक जनसमर्थन बनाए रखना आसान नहीं होता। बदलते सामाजिक समीकरण, आर्थिक चुनौतियां, क्षेत्रीय आकांक्षाएं और वैश्विक परिस्थितियां अक्सर राजनीतिक नेतृत्व की परीक्षा लेती हैं। ऐसे में लगातार जनता का विश्वास प्राप्त करना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि माना जाता है।

स्वतंत्रता के बाद जब भारत ने लोकतंत्र की राह पर अपने पहले कदम रखे थे, तब पंडित जवाहरलाल नेहरू के सामने राष्ट्र निर्माण की विशाल चुनौती थी। विभाजन की पीड़ा, आर्थिक कठिनाइयों, प्रशासनिक पुनर्गठन और संस्थाओं के निर्माण जैसे कठिन कार्यों के बीच उन्होंने आधुनिक भारत की नींव रखने का प्रयास किया। उनके नेतृत्व में लोकतांत्रिक संस्थाओं का विकास हुआ और योजनाबद्ध विकास की अवधारणा को आगे बढ़ाया गया। बाद के दशकों में विभिन्न प्रधानमंत्रियों ने अपने-अपने समय की चुनौतियों के अनुसार देश को नई दिशा देने का प्रयास किया।

इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में नरेंद्र मोदी राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में उभरे। वर्ष 2014 में पहली बार प्रधानमंत्री बनने के बाद उन्होंने प्रशासनिक सुधार, डिजिटल तकनीक, आधारभूत संरचना, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण, वित्तीय समावेशन और वैश्विक मंचों पर भारत की सक्रिय उपस्थिति को अपनी सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल किया। इसके बाद 2019 और फिर 2024 में मिले जनादेश ने उनके नेतृत्व को और मजबूत आधार प्रदान किया। लगातार तीन बार जनता का समर्थन प्राप्त करना भारतीय राजनीति में एक दुर्लभ उपलब्धि माना जाता है।

प्रधानमंत्री के रूप में मोदी के कार्यकाल में भारत ने कई महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे। डिजिटल भुगतान व्यवस्था का विस्तार, आधार आधारित सेवाओं का प्रसार, रेलवे और सड़क नेटवर्क का विकास, हवाई संपर्क बढ़ाने की योजनाएं, स्वच्छता अभियान, जल आपूर्ति योजनाएं और ग्रामीण क्षेत्रों तक बुनियादी सुविधाओं का विस्तार सरकार की प्रमुख पहलों में शामिल रहे। सरकार का दावा है कि इन प्रयासों ने शासन को अधिक पारदर्शी और तकनीक आधारित बनाया है।

आर्थिक मोर्चे पर भी मोदी सरकार ने अनेक सुधारों को अपनी उपलब्धियों के रूप में प्रस्तुत किया है। वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) की शुरुआत को स्वतंत्र भारत के सबसे बड़े कर सुधारों में गिना जाता है। इसके अलावा दिवाला एवं शोधन अक्षमता संहिता, डिजिटल कर व्यवस्था, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण तथा बैंकिंग क्षेत्र में सुधारों को भी महत्वपूर्ण कदम बताया जाता है। सरकार का दावा है कि इन पहलों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को अधिक संगठित और प्रतिस्पर्धी बनाने में मदद की है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत की सक्रियता बढ़ी है। वैश्विक मंचों पर भारत की भूमिका, जी-20 की अध्यक्षता, विभिन्न देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी और वैश्विक दक्षिण की आवाज के रूप में भारत की बढ़ती पहचान को सरकार अपनी कूटनीतिक सफलता के रूप में प्रस्तुत करती है। कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की बढ़ती भागीदारी ने देश की वैश्विक स्थिति को मजबूत करने में योगदान दिया है।

प्रधानमंत्री मोदी के इस रिकॉर्ड को लेकर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) और भारतीय जनता पार्टी के भीतर उत्साह का माहौल देखा गया। इस अवसर पर दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित बैठक में गठबंधन के वरिष्ठ नेताओं ने इसे भारतीय लोकतंत्र की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया। बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा सहित कई वरिष्ठ नेता मौजूद रहे। विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री और गठबंधन दलों के प्रतिनिधियों ने भी प्रधानमंत्री को बधाई दी।

केंद्र सरकार द्वारा जारी विशेष पुस्तिका में पिछले 12 वर्षों की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि प्रशासनिक सुधारों, डिजिटल इंडिया अभियान, कर व्यवस्था में बदलाव और आधारभूत संरचना के विस्तार ने देश के विकास को नई गति दी है। पुस्तिका में यह भी दावा किया गया है कि करदाताओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है तथा सार्वजनिक निवेश के माध्यम से विकास परियोजनाओं को गति मिली है। सरकार का मानना है कि इन प्रयासों ने भारत को विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्रधानमंत्री मोदी की इस उपलब्धि पर दुनिया के विभिन्न देशों के नेताओं ने भी शुभकामनाएं भेजी हैं। अनेक देशों के राष्ट्राध्यक्षों और वरिष्ठ नेताओं ने इसे भारतीय लोकतंत्र में जनता के विश्वास और स्थिर नेतृत्व का प्रतीक बताया। विभिन्न देशों ने भारत के साथ अपने संबंधों को और मजबूत बनाने की इच्छा भी व्यक्त की है। यह अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया इस बात का संकेत मानी जा रही है कि भारत आज वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी ने इस अवसर पर देशवासियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जनसेवा ही सुशासन की सबसे बड़ी कसौटी है। उन्होंने कहा कि किसी भी जनप्रतिनिधि का वास्तविक मूल्यांकन उसके पद से नहीं, बल्कि जनता के प्रति उसकी प्रतिबद्धता, कर्तव्यनिष्ठा और सेवा भावना से होता है। अपने संदेश में उन्होंने विनम्रता, समर्पण और निरंतर जनकल्याण को लोकतांत्रिक नेतृत्व की सबसे बड़ी पहचान बताया।

भारतीय राजनीति में रिकॉर्ड बनते और टूटते रहते हैं, लेकिन कुछ उपलब्धियां अपने समय की पहचान बन जाती हैं। नरेंद्र मोदी का देश के सबसे लंबे समय तक लगातार निर्वाचित प्रधानमंत्री बनना भी ऐसा ही एक क्षण माना जा रहा है। समर्थकों के लिए यह जनविश्वास की ऐतिहासिक मुहर है, जबकि राजनीतिक विश्लेषकों के लिए यह भारतीय लोकतंत्र की बदलती प्रकृति और मतदाताओं की नई प्राथमिकताओं को समझने का अवसर है। आने वाले वर्षों में इतिहास इस दौर का मूल्यांकन अपने तरीके से करेगा, लेकिन फिलहाल इतना निश्चित है कि भारतीय लोकतंत्र की लंबी यात्रा में यह उपलब्धि एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में दर्ज हो चुकी है।

महंगाई की मूक दस्तक से बढ़ी मुश्किलें, रसोई से अस्पताल तक हर खर्च पर पड़ रहा असर

नई दिल्ली। देश में महंगाई भले ही सुर्खियों में पहले जैसी तीव्रता से दिखाई नहीं दे रही हो, लेकिन आम आदमी की रोजमर्रा की जिंदगी पर उसका असर लगातार गहराता जा रहा है। बाजार में वस्तुओं की कीमतें जिस तरह धीरे-धीरे बढ़ रही हैं, उसने मध्यम वर्ग और निम्न आय वर्ग के परिवारों के घरेलू बजट को बुरी तरह प्रभावित करना शुरू कर दिया है। विशेष रूप से मार्च के बाद से आवश्यक उपभोक्ता वस्तुओं, खाद्य तेल, पैकेटबंद खाद्य सामग्री, घरेलू उपयोग के उत्पादों, चिकित्सा उपकरणों और इलेक्ट्रॉनिक सामानों की कीमतों में लगातार वृद्धि दर्ज की जा रही है। पश्चिम एशिया में जारी तनाव और ऊर्जा क्षेत्र में बढ़ती लागत ने इस दबाव को और बढ़ा दिया है, जिसका सीधा असर आम उपभोक्ता तक पहुंच रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि महंगाई का यह नया दौर पहले की तरह अचानक दिखाई नहीं दे रहा, बल्कि धीरे-धीरे उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति को कमजोर कर रहा है। कंपनियां सीधे कीमतें बढ़ाने के बजाय कई मामलों में उत्पादों की मात्रा कम करके उपभोक्ताओं पर अतिरिक्त बोझ डाल रही हैं। इसे बाजार की भाषा में "श्रिंकफ्लेशन" कहा जाता है, जहां उत्पाद की कीमत लगभग समान रखी जाती है लेकिन उसकी मात्रा घटा दी जाती है। परिणामस्वरूप ग्राहक को पहले जितना सामान पाने के लिए अब अधिक पैसा खर्च करना पड़ रहा है।

सबसे अधिक असर रसोई बजट पर दिखाई दे रहा है। खाद्य तेलों की कीमतों में पिछले कुछ महीनों के दौरान उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। सरसों तेल, सोयाबीन तेल और अन्य खाद्य तेलों की कीमतें लगातार ऊपर जा रही हैं। कई ब्रांडों ने अपने पैकेज का आकार कम कर दिया है। जहां पहले एक लीटर तेल उपलब्ध होता था, वहीं अब कम मात्रा वाले पैक बाजार में उतारे जा रहे हैं। उपभोक्ता पहली नजर में कीमतों में ज्यादा अंतर महसूस नहीं करता, लेकिन वास्तविक रूप से उसे कम मात्रा मिल रही है। यही स्थिति अन्य पैकेटबंद खाद्य उत्पादों और दैनिक उपयोग की वस्तुओं में भी दिखाई दे रही है।

डिटर्जेंट, चायपत्ती, बिस्कुट, मसाले, स्नैक्स और अन्य एफएमसीजी उत्पादों की कीमतों में भी वृद्धि का सिलसिला जारी है। कंपनियां कच्चे माल की बढ़ती लागत, परिवहन खर्च, पैकेजिंग सामग्री की महंगाई और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पर दबाव को इसका प्रमुख कारण बता रही हैं। उद्योग जगत का कहना है कि उत्पादन लागत में लगातार वृद्धि के कारण कीमतों में संशोधन करना उनकी मजबूरी बन गया है।

महंगाई का वास्तविक प्रभाव तब समझ में आता है जब परिवार अपने मासिक बजट का हिसाब लगाते हैं। कुछ महीने पहले जिस परिवार का रसोई खर्च 15 हजार रुपये के आसपास था, वह अब उसी स्तर की खपत बनाए रखने के लिए कहीं अधिक राशि खर्च करने को मजबूर है। दूध, तेल, दाल, सब्जियां, मसाले और अन्य खाद्य वस्तुओं की बढ़ती कीमतों ने घरेलू अर्थव्यवस्था पर अतिरिक्त दबाव बना दिया है। परिणामस्वरूप परिवारों को या तो खर्चों में कटौती करनी पड़ रही है या फिर बचत कम करनी पड़ रही है। महंगाई का प्रभाव केवल खाद्य वस्तुओं तक सीमित नहीं है। स्वास्थ्य क्षेत्र में भी इसके दूरगामी परिणाम दिखाई देने लगे हैं। चिकित्सा क्षेत्र में इस्तेमाल होने वाले अनेक उपकरण और सामग्री आयातित कच्चे माल तथा पेट्रोकेमिकल उत्पादों पर निर्भर हैं। कच्चे माल और परिवहन लागत में वृद्धि के कारण दवाओं, चिकित्सा उपकरणों और अस्पतालों में उपयोग होने वाली डिस्पोजेबल सामग्री की कीमतों पर दबाव बढ़ रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है तो इलाज का खर्च और अधिक बढ़ सकता है। अस्पतालों में उपयोग होने वाले कैथेटर, सर्जिकल किट, स्टेंट, इम्प्लांट और अन्य विशेष उपकरण पहले ही लागत वृद्धि का सामना कर रहे हैं। इसके अलावा सिरिंज, आईवी सेट, ग्लव्स और अन्य प्लास्टिक आधारित चिकित्सा सामग्री के दाम भी बढ़ सकते हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र के जानकारों का मानना है कि इससे न केवल मरीजों का प्रत्यक्ष खर्च बढ़ेगा बल्कि स्वास्थ्य बीमा कंपनियों पर भी दबाव बढ़ सकता है, जिसका असर भविष्य में बीमा प्रीमियम पर दिखाई दे सकता है। इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग भी बढ़ती लागत के संकट से अछूता नहीं है। वैश्विक स्तर पर चिप, सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रॉनिक पुर्जों की कीमतों में उतार-चढ़ाव का असर भारतीय बाजार पर भी पड़ रहा है। स्मार्टफोन, लैपटॉप, टैबलेट, टेलीविजन और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के निर्माण में उपयोग होने वाले अधिकांश पुर्जे आयात किए जाते हैं। आयात लागत बढ़ने और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान के कारण कंपनियों पर कीमतें बढ़ाने का दबाव लगातार बढ़ रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार आने वाले महीनों में स्मार्टफोन और लैपटॉप जैसे उत्पादों की कीमतों में और वृद्धि देखने को मिल सकती है। एयर कंडीशनर, रेफ्रिजरेटर, वॉशिंग मशीन और स्मार्ट होम उपकरणों की लागत भी बढ़ने की संभावना जताई जा रही है। गेमिंग उद्योग पर भी इसका प्रभाव पड़ सकता है क्योंकि गेमिंग कंसोल और उच्च क्षमता वाले कंप्यूटर हार्डवेयर में इस्तेमाल होने वाले पुर्जों की कीमतें बढ़ रही हैं।

आर्थिक विश्लेषकों का मानना है कि पश्चिम एशिया में जारी भू-राजनीतिक तनाव ने ऊर्जा बाजार को अस्थिर बना दिया है। कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि का प्रभाव केवल पेट्रोल और डीजल तक सीमित नहीं रहता बल्कि परिवहन, उत्पादन और वितरण की पूरी श्रृंखला को प्रभावित करता है। जब ऊर्जा महंगी होती है तो वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने की लागत बढ़ जाती है और अंततः इसका बोझ उपभोक्ता पर पड़ता है।

महंगाई का यह दौर इसलिए भी चिंताजनक माना जा रहा है क्योंकि यह धीरे-धीरे जीवन के लगभग हर क्षेत्र को प्रभावित कर रहा है। रसोई से लेकर अस्पताल तक और मोबाइल फोन से लेकर घरेलू उपकरणों तक, हर क्षेत्र में बढ़ती लागत के संकेत दिखाई दे रहे हैं। आम उपभोक्ता को शायद हर दिन इसका बड़ा झटका महसूस न हो, लेकिन महीने के अंत में बजट बनाते समय बढ़ते खर्च का असर साफ नजर आने लगा है। आर्थिक विशेषज्ञों का कहना है कि यदि वैश्विक परिस्थितियों में जल्द सुधार नहीं हुआ और ऊर्जा कीमतों पर नियंत्रण नहीं आया तो आने वाले महीनों में महंगाई का दबाव और बढ़ सकता है।

मनी म्यूल यानी वह व्यक्ति जो अवैध रूप से प्राप्त पैसों को किसी अन्य व्यक्ति की ओर से कहीं ट्रांसफर करता है या भेजता है।

मनी म्यूल न बनें!

आपका बैंक खाता = आपकी पूंजी

- पैसे ट्रांसफर करने के लिए किसी दूसरे व्यक्ति को अपना बैंक खाता इस्तेमाल न करने दें।
- अगर कोई अन्य व्यक्ति आपके बैंक खाते के ज़रिए पैसा प्राप्त करता है या भेजता है तो आपको जेल हो सकती है।
- अपने बैंक खाते की जानकारी, ओटीपी या पासवर्ड किसी को न बताएं।

आपके खाते की सुरक्षा, आपकी सुरक्षा।

अवैध कमाई के जाल में न फंसें।

क्यूआर कोड स्कैन करें।

अधिक जानकारी के लिए
देखें **https://rbikehtahai.rbi.org.in**
अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए **rbikehtahai@rbi.org.in** पर भेजें।

आधिकारिक व्हॉट्सऐप
नं. 99990 41935 / 99309 91935

जनहित में जारी
भारतीय रिज़र्व बैंक
RESERVE BANK OF INDIA
www.rbi.org.in

संपादकीय

विकास और विश्वास

सत्ता शीर्ष पर बारह साल के कार्यकाल के दौरान अनेक विशिष्ट उपलब्धियां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हिस्से में आई हैं। एक विशेष उपलब्धि यह भी है कि पहले गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी ने पहले प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के लगातार सबसे लंबे समय तक निर्वाचित प्रधानमंत्री रहने के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया है। पं. नेहरू ने पहले आम चुनाव के बाद 13 मई, 1952 को विधिवत निर्वाचित प्रधानमंत्री के रूप में कार्यकाल शुरू किया, जो 1964 तक चला। वहीं नरेंद्र मोदी ने 26 मई, 2014 को प्रधानमंत्री पद की शपथ ली और लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ 9 जून, 2024 को ली। निश्चय ही भारत जैसे विशाल, सांस्कृतिक विविधता वाले तथा दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाले देश का इतने लंबे समय तक प्रधानमंत्री बने रहना एक बड़ी उपलब्धि कही जाएगी। भाजपा नीत राजग गठबंधन सरकार के हिस्से में यूं तो कई उपलब्धियां हैं, लेकिन एक सशक्त केंद्र सरकार देश की एकता-अखंडता के लिए प्रतिबद्ध रही है। निस्संदेह, मोदी युगीन इन बारह सालों को अनुच्छेद-370 हटाने, नक्सलवाद के खात्मे, आतंकवाद के खिलाफ आक्रामक सुरक्षा नीति, आध्यात्मिक पर्यटन, महिला आरक्षण, डिजिटल इंडिया मुहिम, तीन तलाक से मुक्ति व आर्थिक आरक्षण की उपलब्धियों के लिए याद किया जाएगा। निस्संदेह, कुछ फैसले ऐसे रहे हैं जिन्होंने देश को नई दिशा दी। लोगों को गरिमा व अवसर दिलाने के उद्देश्य से प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, स्वच्छ भारत, पीएम आवास योजना और आयुष्मान भारत जैसी योजनाएं बदलावकारी कही जाती हैं। साथ ही उन लोगों को 'अंत्योदय दृष्टि' से प्रेरित होकर लाभ देने की कोशिश हुई, जो असमानता के चलते पीछे छूट गए थे। बड़ी संख्या में जनधन खाते खोले जाने का लाभ विशेष रूप से महिलाओं को मिला। जहां डायरेक्ट बेनिफट ट्रांसफर से जहां लोगों को समय पर मदद मिली, वहीं बिचौलियों पर नकेल कसने से भ्रष्टाचार पर अंकुश भी लगा। मोदी सरकार ने 'एक देश, एक कर' की सोच को जीएसटी लागू करके हकीकत बनाया।

जब नरेंद्र मोदी पहली बार प्रधानमंत्री की कुर्सी पर विराजे थे तो उन्होंने उद्घोष किया था कि न 'खाऊंगा और न खाने दूंगा।' यह हकीकत है मानवीय दुर्बलताओं और समाज में लगातार बढ़ती भौतिकवाद की सोच के चलते समाज में भ्रष्टाचार पर अपेक्षित लगाम नहीं लगी, लेकिन उनके कार्यकाल में कोई मंत्री प्रत्यक्ष तौर पर किसी बड़े भ्रष्टाचार में लिप्त नजर नहीं आया। निस्संदेह, खाड़ी संकट के चलते महंगे हुए पेट्रोलियम पदार्थों से महंगाई असर दिखा रही है, लेकिन समय रहते प्रबंधन के चलते वैसे हालात भी नहीं पैदा हुए, जैसे हमारे पड़ोसी देशों में नजर आ रहे हैं। अमेरिका दबाव के बावजूद रणनीतिक ढंग से रूस से सस्ता तेल खरीदकर मोदी सरकार ने जहां देश के आपातकालीन पेट्रोलियम भंडारण को बढ़ाया, वहीं दुर्लभ विदेशी मुद्रा की भी बचत की। आज देश ने कच्चे तेल के खरीद के विकल्पों को विस्तार दिया है, जो संकटकाल में मददगार साबित हुए हैं। यह अच्छी बात है कि प्रधानमंत्री द्वारा सौर ऊर्जा, स्वच्छ ऊर्जा आदि वैकल्पिक संसाधनों के लिए जो अभियान चलाए गए, उन्होंने पश्चिम एशिया संकट के दौरान देश की आर्थिकी को संबल दिया। एक समय विपक्षी नेता पेट्रोल में एथनॉल मिलाए जाने को लेकर आलोचना कर रहे थे, लेकिन यह फैसला मौजूदा ऊर्जा संकट में मददगार साबित हुआ। भारत एक विकासशील देश है, बड़ी आबादी जहां इसकी ताकत है, वहीं कमजोरी भी है। देश के अस्सी करोड़ से अधिक लोगों को मुफ्त अनाज उपलब्ध कराना जहां एक बड़ी उपलब्धि है, वहीं लोगों को स्वावलंबी बनाने की दिशा में कदम उठाने के लिए पहल करने को भी रेखांकित करता है। हालांकि, कोरोना संकट, रूस-यूक्रेन युद्ध, इस्राइल-हमास संघर्ष और फिर ईरान अमेरिका-इस्राइल युद्ध के संकट से पूरी दुनिया की आपूर्ति श्रृंखला बुरी तरह प्रभावित हुई है, लेकिन राजग सरकार इन चुनौतियों का बखूबी मुकाबला करती नजर आई। इसके बावजूद मोदी सरकार की फिलहाल बेरोजगारी व महंगाई पर अंकुश लगाना प्राथमिकता होनी चाहिए। भारत युवाओं का देश है, इस युवाशक्ति का देश हित में कैसे बेहतर इस्तेमाल हो सकता है, इसकी दृष्टि निश्चय ही प्रधानमंत्री के पास है। तभी सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास का लक्ष्य पूरा हो सकेगा।

नरेंद्र मोदी के 12 सालः भरोसे के हकीकत में बदलने का दौर

> "खैर यह सब होते हुए भी नरेन्द्र मोदी सरकार के सामने अभी चुनौतियां कम नहीं हैं। रोजगार सृजन, प्रति व्यक्ति आय में अंतर, शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, जल जीवन मिशन के बावजूद पेयजल की सहज उपलब्धता, खेती की बरसात पर निर्भरता, परिसीमन आदि ऐसे बहुत से मुद्दे हैं जिन पर ठोस काम किया जाना है।

यदि मॉनिंग कंसल्ट की माने तो दुनिया के नेताओं की सूची पर एक नजर दौड़ाई जाएं तो केई भी वैश्विक नेता स्वीकार्यता में नरेन्द्र मोदी के आसपास भी नहीं टिकते। विपक्षी पार्टियां द्वारा लगातार देश और विदेश में अभियान चलाने के बावजूद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रेंकिंग या स्वीकार्यता के मामलें में वैश्विक नेताओं से बहुत आगे हैं। 68 प्रतिशत स्वीकार्यता नरेन्द्र मोदी की है जबकि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की स्वीकार्यता रेंक लगातार नेगेटिव जा रही है। फालोवर्स में भी नरेन्द्र मोदी सबसे आगे हैं। दुनिया का संभवतः हमारा ही देश होगा जहां देश के बाहर भारत की छवि खराब करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी जा रही उसके बावजूद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की यह स्वीकार्यता निश्चित रुप से भारत ही नहीं दुनिया के अन्य देशों में भी उनकी लोकप्रियता और सर्वमान्यता को दर्शाती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सबसे लंबे समय तक प्रधानमंत्री पद पर रहने वाले चुनिंदा प्रधानमंत्री बन गए हैं। चुनिंदा इसलिए कि देश में पहले लोकसभा चुनाव 1952 में हुए पर पं. नेहरु 1947 से 1952 तक भी प्रधानमंत्री रहे। लगातार 12 साल कोई कम नहीं होते और वह भी लगातार 12 साल। सबसे बडी बात यह कि इस दौरान नरेन्द्र मोदी सरकार द्वारा ऐसे साहसिक निर्णय किये गये हैं जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। माना तो यही जाता था कि कश्मीर में धारा 370 और 35 ए हटाना, राममंदिर का निर्माण, डिजिटल क्रांति, वैश्विक नेतृत्व, नोटबंदी, एक देश एक कर, घर घर शोचालय, घर घर कचरा संग्रहण, रक्षा उपकरणों का निर्यात, किसान सम्मान, मेक इन इंडिया, इंडिया फर्स्ट, बड़ी अर्थ व्यवस्था, तेजी से ढांचागत विकास, डिजिटल भुगतान, नक्सलवाद की नेस्तनाबूदी, आत्मनिर्भर

भारत, परिवहन क्षेत्र में ढांचागत बदलाव आदि आदि समय समय पर की जाने वाली घोषणाएं केवल चुनाव जीतने के जुमले हैं पर लगभग असंभव माने जाने वाले यह काम आज धरातल पर उतरना सबसे बड़ी उपलब्धी मानी जा सकती है। इससे सबके साथ ही सबसे आश्चर्य जनक बात यह है कि लाख विरोध के बावजूद विपक्ष आज हाशिये में चला गया है।कश्मीर से धारा 370 और 35 ए की समाप्ति हो चुकी है। दुनिया के किसी देश ने खुलकर इसका विरोध करने की हिम्मत नहीं दिखाई। बाबरी मस्जिद के स्थान पर राममंदिर का निर्माण हो चुका है तो तीन तलाक, सीएए, यूसीसी और यहां तक कि सर्जीकल स्ट्राइक के बाद ऑपरेशन सिन्दुर तक पर दुनिया के किसी देश की भारत के खिलाफ खुलकर आवाज उठाने की हिम्मत नहीं हो पाई है। आज अर्थ व्यवस्था में जिस तेजी से बदलाव आया है और चौथी बड़ी अर्थ व्यवस्था बनने के बाद अब तीसरी बड़ी अर्थ व्यवस्था बनने की और तेजी से कदम बढ़ चुके हैं। जनधन योजना के समय जिस तरह से आलोचना का दौर चला था आज भुगतान में डिजिटलीकरण में इसकी बड़ी भूमिका तय हो चुकी है। जो लगभग असंभव माना जा सकता था वह आज डिजिटल भुगतान के माध्यम से संभव हो पाया है और पांच रु. के टमाटर का भुगतान भी सब्जीवाले तक को यूपीआई से आसानी से होने लगा है। सरकारी सामाजिक सुरक्षा योजना के भुगतान, पेंशन, अनुदान आदि आज सीधे खातों में जाने लगे हैं। यह किसी दिवा स्वप्न से कम नहीं है। आईपीसी सीपीसी में बदलाव किया जा चुका है। तो जीएसटी में लाख कमियां गिनाने के बावजूद आज समूचा देश एक देश एक कर के छाते के नीचे आ चुका है। बुनियादी ढांचें में तेजी से बदलाव आया है। आज वंदे भारत और नमो भारत ट्रेन चलने लगी है तो 33 किमी प्रतिदिन हाईवे का निर्माण हो रहा है। एक्सप्रेस हाईवे से आवागमन आसान हुआ है। आयुष्मान योजना से 50 करोड़ लोगों को जोड़ा जा चुका है तो सस्ती जेनेरिक दवाओं की उपलब्धता का नेटवर्क विस्तारित किया गया है। आज 98 प्रतिशत घरों से घर घर कचरा संग्रहण होने लगा है तो अब घर घर में शोचालय बन चुके हैं। कोरोना के दौरान हमारे प्रयासों को सारी दुनिया द्वारा सराहा गया यहां तक कि कोरोना के दौरान जीवन रक्षक की भूमिका में भारत ने भूमिका निभाई। किसानों की आय में बढ़ोतरी के ठोस प्रयास हुए हैं तो किसान सम्मान निधि के माध्यम से किसानों को उनका आत्मसम्मान उपलब्ध कराया गया है। एमएसपी व्यवस्था में सुधार हुए हैं तो खेती किसानी के क्षेत्र में बदलाव छाप दिखाई दे रहा है। मेक इन इंडिया और इंडिया फर्स्ट भी आज साकार होता दिखाई दे रहा है। आज हम रक्षा उपकरणों का निर्यात करने लगे हैं तो सहस्त्रबलों के आधुनिकीकरण और निर्णय की स्वतंत्रता का परिणाम है कि आज सेनाएं आत्मगौरव के साथ आगे बढ़ रही है। आज देश आत्म निर्भर भारत की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

जहां तक कूटनीतिक स्तर पर सफलता की बात है तो भारत आज पिछलग्गू देशों में नहीं बल्कि दुनिया का नेतृत्व करने की स्थिति में आ गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप लाख प्रयासों के बावजूद भारत के खिलाफ कुछ खास कर नहीं पा रहे हैं। पाकिस्तान के पक्ष में आज तुरकिया जैसे एकाध को छोड़कर कोई देश बोलने की स्थिति में नहीं है। मालदीव को नरेन्द्र मोदी के एक फोटो ट्वीट ने सबक सीखा दिया तो दूसरे देश भी भारत की ताकत को समझने लगे हैं।

खैर यह सब होते हुए भी नरेन्द्र मोदी सरकार के सामने अभी चुनौतियां कम नहीं हैं। रोजगार सृजन, प्रति व्यक्ति आय में अंतर, शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, जल जीवन मिशन के बावजूद पेयजल की सहज उपलब्धता, खेती की बरसात पर निर्भरता, परिसीमन आदि ऐसे बहुत से मुद्दे हैं जिन पर ठोस काम किया जाना है। देश में जिस तरह से पेपर लीक होने के मामले सामने आये हैं इससे युवाओं में निराशा हुई है उसे दूर करने की चुनौती सामने हैं तो स्टार्ट अप और कौशल विकास के बावजूद बेरोजगारी की दर अभी भी चिंतनीय स्तर पर है। साइबर क्राइम और गेमिंग जैसी नई चुनौतियां तो सोशल मीडिया के दुरुपयोग और अत्यधिक उपयोग के साइड इफेक्ट आदि अनेक समस्याएं समाधान चाहती है। देश आज तेजी से एक देष एक चुनाव के धरातल पर उतरने का इंतजार कर रहा है। रिन्यूवल एनर्जी पर बहुत कुछ हासिल करने के बावजूद अमेरिका ईरान युद्ध के कारण जिस तरह से तेल और एलपीजी का संकट आया है इसका भी दीर्घकालीन समाधान खोजा जाना है। हांलाकि समस्याएं अनवरत और नियमित प्रक्रिया है पर दीर्घकालीन योजनाओं से आसानी से निपटा जा सकता है।

इस सबके बावजूद देशवासियों को नरेन्द्र मोदी के प्रति पूरा भरोसा है। यही कारण है कि विपक्ष की लाख आलोचनाओं के बावजूद नरेन्द्र मोदी की स्वीकार्यता और भरोसे व उनके आत्मविश्वास में किसी तरह की कमी नहीं आई है। सौ टके की बात कही जाएं तो नरेन्द्र मोदी की अपार उपलब्धियों के बावजूद चुनौतियां भी अपार है और सबसे अच्छी बात यह कि देशवासियों का उनपर भरोसा भी पूरा है और वैश्विक स्वीकार्यता भी सबसे अधिक है।

प्रेरणा

जब जीवन दूसरी बार अवसर देता है

जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि हम अक्सर सफलता को स्थायी और असफलता को अंतिम सत्य मान लेते हैं। जब सब कुछ हमारे अनुकूल चल रहा होता है, तब हमें लगता है कि यह सिलसिला हमेशा जारी रहेगा, और जब परिस्थितियाँ विपरीत हो जाती हैं, तब हमें प्रतीत होता है कि अब आगे कोई रास्ता नहीं बचा। लेकिन वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग है। जीवन एक निरंतर परिवर्तनशील यात्रा है, जहाँ उतार-चढ़ाव, हार-जीत और सफलता-असफलता एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। कई बार जो घटना हमें विनाश जैसी लगती है, वही भविष्य में हमारे लिए सबसे बड़ा वरदान साबित होती है। विश्व के महान उद्यमी स्टीव जॉब्स का जीवन इसी सत्य का सबसे प्रभावशाली उदाहरण है। स्टीव जॉब्स ने कभी अपने जीवन को आसान परिस्थितियों में नहीं जिया। बचपन से ही उन्हें यह समझ आ गया था कि उन्हें अपनी पहचान स्वयं बनानी होगी। वे उन लोगों में से नहीं थे जो परिस्थितियों का इंतजार करते हैं, बल्कि वे परिस्थितियों को अपने अनुसार बदलने का प्रयास करते थे। उनके भीतर कुछ नया करने की अद्भुत बेचैनी थी। यही बेचैनी आगे चलकर दुनिया की तकनीकी क्रांति का कारण बनी। युवावस्था में उन्होंने महसूस किया कि पारंपरिक सोच से हटकर कुछ करना आवश्यक है। उनके भीतर यह विश्वास था कि तकनीक केवल मशीनों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि आम इंसान के जीवन को बेहतर बनाने का माध्यम बननी चाहिए। इसी सोच ने उन्हें अपने मित्र स्टीव वॉजनियाक के साथ मिलकर एक ऐसे सपने की नींव रखने के लिए प्रेरित किया, जिसे दुनिया आज एप्पल के नाम से जानती है। एक छोटे से गैराज में शुरू हुई यह यात्रा धीरे-धीरे सफलता की मिसाल बन गई। एप्पल ने ऐसे उत्पाद बनाए जिन्होंने कंप्यूटर उद्योग की परिभाषा बदल दी। कंपनी की लोकप्रियता बढ़ती गई और स्टीव जॉब्स युवा पीढ़ी के प्रेरणास्रोत बन गए। लोग उन्हें दूरदर्शी नेता और असाधारण नवप्रवर्तक के रूप में देखने लगे। ऐसा प्रतीत होता था कि अब उनके जीवन में केवल उपलब्धियाँ ही उपलब्धियाँ हैं। लेकिन अक्सर जीवन की सबसे कठिन परीक्षा उसी समय आती है, जब व्यक्ति स्वयं को सबसे अधिक सफल समझने लगता है। एप्पल के भीतर समय के साथ मतभेद बढ़ने लगे। कंपनी का विस्तार हो रहा था और उसके साथ ही निर्णय लेने की जटिलताएँ भी बढ़ रही थीं। जॉब्स की कार्यशैली अत्यंत रचनात्मक और साहसी थी, जबकि कंपनी के कुछ वरिष्ठ अधिकारी अधिक व्यावहारिक और पारंपरिक दृष्टिकोण रखते थे। विचारों का यह टकराव धीरे-धीरे गंभीर संघर्ष में बदल गया। अंततः वह क्षण आया जब स्टीव जॉब्स को उसी कंपनी से बाहर कर दिया गया, जिसकी स्थापना उन्होंने स्वयं की थी।

यह घटना उनके जीवन की सबसे बड़ी व्यक्तिगत और पेशेवर हार थी। जिस संगठन को उन्होंने अपने सपनों का विस्तार माना था, उससे अलग होना किसी गहरे आघात से कम नहीं था। अचानक उन्हें लगा कि उनकी वर्षों की मेहनत, उनकी पहचान और उनके सपने सब कुछ उनसे छिन गया है। उस समय वे केवल एक उद्यमी नहीं थे, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति थे जो अपने ही बनाए संसार से बाहर कर दिए गए थे। कई लोग ऐसी परिस्थिति में टूट जाते हैं। वे अपने अतीत को कोसते रहते हैं और परिस्थितियों को दोष देते हुए जीवन बिताते हैं। लेकिन स्टीव जॉब्स ने अलग रास्ता चुना। उन्होंने स्वयं से एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा—क्या वास्तव में सब कुछ समाप्त हो गया है? उत्तर था नहीं। कंपनी चली गई थी, लेकिन उनका ज्ञान, अनुभव, कल्पनाशक्ति और रचनात्मकता अभी भी उनके साथ थी। यही समझ उनके जीवन का निर्णायक मोड़ बनी। उन्होंने नई शुरुआत करने का साहस जुटाया। उन्होंने 'नेक्स्ट' नामक कंपनी स्थापित की और साथ ही 'पिक्सर' में निवेश किया। उस समय यह निर्णय जोखिम भरा माना गया। कई लोगों ने सोचा कि उनका स्वर्णिम युग समाप्त हो चुका है। लेकिन महान व्यक्तियों की विशेषता यही होती है कि वे दूसरों की धारणाओं से नहीं, बल्कि अपने विश्वास से आगे बढ़ते हैं। पिक्सर के साथ उनका सफर धीरे-धीरे रंग लाने लगा। कंपनी ने एनीमेशन की दुनिया में ऐसे प्रयोग किए, जिन्हें पहले असंभव माना जाता था। जब 'टॉय स्टोरी' रिलीज हुई, तो उसने न केवल दर्शकों का दिल जीता, बल्कि पूरी फिल्म इंडस्ट्री को नई दिशा भी दी। यह सफलता केवल एक व्यावसायिक उपलब्धि नहीं थी, बल्कि यह प्रमाण थी कि सच्ची प्रतिभा किसी एक मंच की मोहताज नहीं होती। उधर नेक्स्ट भी तकनीकी क्षेत्र में नए मानक स्थापित कर रही थी। यद्यपि कंपनी बहुत बड़ी नहीं थी, लेकिन उसकी तकनीकें अत्यंत उन्नत थीं। जॉब्स लगातार सीख रहे थे, प्रयोग कर रहे थे और स्वयं को पहले से अधिक परिपक्व बना रहे थे। एप्पल से बाहर निकाले जाने के बाद उन्होंने जो अनुभव प्राप्त किया, उसने उनके नेतृत्व को और अधिक मजबूत बना दिया। इस बीच एप्पल कठिन दौर से गुजर रही थी। कंपनी अपनी दिशा खो चुकी थी और बाजार में उसका प्रभाव कम होता जा रहा था। जिन लोगों ने कभी स्टीव जॉब्स को बाहर करने का निर्णय लिया था, उन्हें धीरे-धीरे एहसास होने लगा कि कंपनी ने अपनी सबसे बड़ी ताकत खो दी है। अंततः परिस्थितियाँ ऐसी बनीं कि एप्पल को नेक्स्ट का अधिग्रहण करना पड़ा और इसके साथ ही स्टीव जॉब्स की कंपनी में वापसी हुई। यह वापसी किसी फिल्मी कहानी जैसी लगती है। जिस व्यक्ति को कभी बाहर का रास्ता दिखाया गया था, वही व्यक्ति अब कंपनी को बचाने के लिए वापस बुलाया जा रहा था। लेकिन जॉब्स ने बदले की भावना से नहीं, बल्कि निर्माण की भावना से वापसी की। उन्होंने कंपनी को नई दिशा दी, अनावश्यक परियोजनाओं को बंद किया और नवाचार को फिर से केंद्र में स्थापित किया। उनके नेतृत्व में एप्पल ने ऐसे उत्पाद विकसित किए जिन्होंने पूरी दुनिया को प्रभावित किया। आईमैक, आईपॉड, आईफोन और बाद में आईपैड केवल तकनीकी उपकरण नहीं थे, बल्कि वे आधुनिक जीवनशैली के प्रतीक बन गए। इन उत्पादों ने यह सिद्ध कर दिया कि कल्पनाशक्ति और साहस मिलकर दुनिया को बदल सकते हैं। स्टीव जॉब्स की यात्रा हमें यह सिखाती है कि जीवन कभी-कभी हमें उस रास्ते से हटा देता है, जिसे हम अपनी मंजिल समझते हैं। उस समय हमें लगता है कि सब कुछ बिखर गया है, लेकिन बाद में समझ आता है कि वह बिखराव किसी बड़े निर्माण की तैयारी था। यदि जॉब्स को एप्पल से नहीं निकाला गया होता, तो शायद वे पिक्सर जैसी सफलता प्राप्त नहीं कर पाते, नए अनुभव नहीं जुटा पाते और स्वयं को नए रूप में विकसित नहीं कर पाते।

जनता, जमीन, सभ्यता वही, जहां चल रही अभी Modi 'Govern'ment, उस भारत पर कभी नेहरू ने किया Rule

इतिहास की किताबों में आज का दिन एक नए अध्याय के रूप में दर्ज हो गया है। आज नरेंद्र मोदी ने स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को पीछे छोड़ दिया है। यह मुकाबला किसी चुनावी रैली या टीवी डिबेट का नहीं था, बल्कि यह उस रिकॉर्ड का है जो किसी भी लोकतंत्र की रीढ़ होता है यानी जनता का अटूट भरोसा और पद पर निरंतरता। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल के लगातार 4399 दिन पूरे हो गए हैं, और इसी के साथ टूट गया है पंडित नेहरू का सबसे लंबा निरंतर बने रहने का रिकॉर्ड। लेकिन इस महा-रिकॉर्ड के भीतर छिपे दिलचस्प गणित को गौर से देखना होगा। कहने को नेहरू जी कुल 6130 दिन प्रधानमंत्री की कुर्सी पर रहे, लेकिन सच यह है कि उनके शुरुआती 1732 दिन 'इलेक्शन' से नहीं बल्कि 'सिलेक्शन' से तय हुए थे। 15 अगस्त 1947 को माउंटबेटन की सहमति और महात्मा गांधी के निर्देश पर कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने उन्हें देश का मुखिया चुना था। असली लोकतंत्र की शुरुआत हुई 1952 के पहले आम चुनाव से, जब 13 मई 1952 को नेहरू जी एक निर्वाचित प्रधानमंत्री बने। उस दिन से लेकर उनके अंतिम समय तक का सफर 4398 दिनों का था। वहीं दूसरी तरफ, नरेंद्र मोदी का एक भी दिन बिना चुनाव के नहीं बीता। 26 मई 2014 से लेकर आज तक, उन्होंने लगातार तीन आम चुनावों में पूर्ण बहुमत और जनता के सीधे जनादेश की अग्निपरीक्षा को पार किया है। यह बदलाव सिर्फ आंकड़ों का नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र के बदलते मिजाज का प्रतीक है। पंडित नेहरू और नरेंद्र मोदी दोनों ने एक ही देश को चलाया। दोनों के पास वही जनता थी, वही जमीन थी, वही सभ्यता थी। लेकिन एक ने अपने राजनीतिक फैसलों से भारत को उसकी जड़ों से काटने का सतत प्रयास किया और दूसरे ने उन जड़ों को वापस सींचने का और आज हम उसी फर्क की बात करेंगे। 146 करोड़ की आबादी, भाषाई-सांस्कृतिक विविधता, विशाल भौगोलिक विस्तार वाले देश में इतने लंबे समय निर्वाचित सरकार का नेतृत्व।

जब कई देशों में सरकारें बार-बार बदल रही हैं, 12 वर्षों तक नेतृत्व और नीतियों में निरंतरता।

2014, 19 व 24 में लगातार चुनाव जीतकर मोदी ने सरकार बनाई।

नेहरू के बाद ऐसा करने वाले पहले पीएम हैं। पहले गैर-कांग्रेसी पीएम, जिन्होंने दो पूर्ण बहुमत कार्यकाल पूरे किए।

मोदी राज की 12 बड़ी उपलब्धियां

2014: 58 करोड़ से ज्यादा जनधन बैंक खाते खोले गए।

2015: 51 लाख करोड़ का डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर। 4 लाख करोड़ का लीकेज रुका।

2016: उज्ज्वला में 11 करोड़ गरीबों को एलपीजी कनेक्शन। इसी साल उरी हमले के बाद पीओके में सर्जिकल स्ट्राइक।

2017: एकीकृत कर व्यवस्था की सबसे बड़ी योजना जीएसटी।

2018: आयुष्मान भारत से 60 करोड़ की स्वास्थ्य सुरक्षा।

2019: जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा और अनुच्छेद 370 खत्म।

2020-21: 220 करोड़ से ज्यादा कोविड वैक्सीन डोज।

2022: हर घर जल मिशन में 16 करोड़ घरों तक जल पहुंचा।

2023: पहली बार जी-20 की अध्यक्षता और सफल मेजबानी।

2024: अयोध्या राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा; भाजपा का प्रमुख वादा पूरा।

2025: जापान को पछाड़ चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भारत।

2025: पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान पर ऑपरेशन सिंदूर के तहत सैन्य कार्रवाई।

32 देशों ने किया सम्मानित

पीएम मोदी को 32 देशों व अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा सर्वोच्च या नागरिक सम्मान से सम्मानित किया गया है। इनमें मुख्य रूप से फ्रांस, रूस, सऊदी अरब और यूएई का सम्मान शामिल है। मोदी ने अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, समेत दुनिया के 15 देशों की संसद को संबोधित किया है।

सत्ता हासिल करना लक्ष्य नहीं

गांधीजी ने कांग्रेस की 15 प्रांतीय समितियों में से 12 द्वारा सरदार पटेल के पक्ष में दिए गए समर्थन को दरकिनार करते हुए नेहरू का समर्थन किया, जबकि बाकी 3 समितियां तटस्थ रहीं। बाद में नेहरू ने भारत के पहले बड़े राजनीतिक वंश की नींव रखी और इंदिरा गांधी को अपना उत्तराधिकारी बनाने की दिशा में काम किया। नरेंद्र मोदी ने बीजेपी के लिए कई चुनाव जिताए, लेकिन स्वयं कोई निर्वाचित पद नहीं मांगा। 51 वर्ष की उम्र में पार्टी के कहने पर उन्होंने गुजरात के मुख्यमंत्री की क जिम्मेदारी संभाली। मोदी को अधिकांश नेताओं से अलग करने वाली बात उनके क उद्देश्य की स्पष्टता है। उनका लक्ष्य कभी केवल सत्ता हासिल करना नहीं रहा। गांधीजी की तरह सेवा और त्याग उनके लिए सिर्फ शब्द नहीं, जीवन का उद्देश्य है। आने वाले दशकों में नरेंद्र मोदी एक प्रतिष्ठित और ऐतिहासिक व्यक्तित्व के रूप में स्थापित होंगे। भविष्य के प्रधानमंत्री, चाहे किसी भी दल के हों, वे नरेंद्र मोदी की कार्यशैली और नेतृत्व से प्रेरणा लेने की कोशिश करेंगे। आने वाले समय में हर प्रधानमंत्री का मूल्यांकन नरेंद्र मोदी द्वारा स्थापित मानकों के आधार पर किया जाएगा। पीएम मोदी भारत की सरकार चलाते हैं, विरोधी भले ही कहें कि वे बहुत सख्ती से काम करते हैं, लेकिन शायद भारत जैसे देश को चलाने के लिए ऐसी ही सख्ती चाहिए। पर नेहरू ने भारत में सरकार नहीं चलाई, नेहरू ने भारत पर राज किया। राज करने और सरकार चलाने में एक छोटा सा फर्क है। अंग्रेजी शब्द "गवर्न" असल में एक यूनानी शब्द से बना है जिसका मतलब होता है जहाज को रास्ता दिखाना।

अभियान

धर्मः मानवता, मर्यादा और आत्मोन्नति का शाश्वत पथ

मानव सभ्यता के विकास का इतिहास केवल भौतिक प्रगति का इतिहास नहीं है, बल्कि यह मनुष्य के भीतर नैतिकता, करुणा, कर्तव्य और आत्मबोध के विकास की भी कहानी है। जब मनुष्य ने समाज में रहना सीखा, तब उसे ऐसे सिद्धांतों और मूल्यों की आवश्यकता महसूस हुई जो उसके जीवन को दिशा दे सकें। इन्हीं सिद्धांतों और मूल्यों का विकसित स्वरूप धर्म कहलाया। धर्म केवल पूजा-पद्धति, अनुष्ठान या किसी विशेष समुदाय की मान्यताओं का नाम नहीं है। धर्म वह शक्ति है जो मनुष्य को पशुता से ऊपर उठाकर मानवता के उच्चतम स्तर तक पहुँचाती है। धर्म व्यक्ति को यह सिखाता है कि जीवन का उद्देश्य केवल अपने लिए जीना नहीं, बल्कि दूसरों के कल्याण, समाज की समृद्धि और आत्मिक उन्नति के लिए भी कार्य करना है।

भारतीय चिंतन में धर्म को जीवन का आधार माना गया है। धर्म का अर्थ किसी संकीर्ण पहचान से नहीं, बल्कि उस आचरण से है जो सत्य, न्याय, करुणा और सदाचार पर आधारित हो। यदि किसी व्यक्ति के जीवन में धर्म नहीं है, तो उसके पास भले ही ज्ञान, धन और शक्ति हो, फिर भी उसका जीवन अधूरा माना जाता है। यही कारण है कि हमारे प्राचीन ग्रंथों में धर्म को मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण तत्व बताया गया है। धर्म मनुष्य के भीतर विवेक को जागृत करता है और उसे सही तथा गलत के बीच अंतर समझने की क्षमता प्रदान करता है। हितोपदेश में कहा गया है कि धर्म के बिना मनुष्य और पशु में कोई विशेष अंतर नहीं रह जाता। भोजन करना, सोना, भय महसूस करना और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करना ये सभी कार्य पशु भी करते हैं और मनुष्य भी। लेकिन मनुष्य को विशिष्ट बनाती है उसकी बुद्धि, उसका विवेक और उसका नैतिक बोध। यही नैतिक बोध धर्म के माध्यम से विकसित होता है। धर्म मनुष्य को केवल अधिकारों की नहीं, बल्कि कर्तव्यों की भी याद दिलाता है। वह बताता है कि समाज में रहते हुए प्रत्येक व्यक्ति की कुछ जिम्मेदारियाँ हैं और उनका पालन ही उसके जीवन को सार्थक बनाता है।

धर्म का सबसे बड़ा उद्देश्य मनुष्य के भीतर मानवता का विकास करना है। यदि कोई व्यक्ति प्रतिदिन पूजा-पाठ करता है, तीर्थयात्राएँ करता है, धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेता है, लेकिन उसके व्यवहार में दया, करुणा और सत्यनिष्ठा का अभाव है, तो उसका धार्मिक आचरण अधूरा माना जाएगा। वास्तविक धर्म वही है जो व्यक्ति को दूसरों के दुख को समझने, जरूरतमंदों की सहायता करने और समाज में सद्भाव स्थापित करने के लिए प्रेरित करे। धर्म का मूल स्वरूप प्रेम, सहिष्णुता और सेवा में निहित है।

भारतीय संस्कृति में भगवान श्रीराम को धर्म का साक्षात स्वरूप माना गया है। श्रीराम का जीवन यह दर्शाता है कि धर्म केवल उपदेश देने की वस्तु नहीं, बल्कि उसे अपने व्यवहार में उतारना आवश्यक है। जब उनके पिता दशरथ ने उन्हें वनवास जाने का आदेश दिया, तब उन्होंने बिना किसी विरोध के उस आज्ञा को स्वीकार कर लिया। उनके पास राज्य, शक्ति और जनसमर्थन सब कुछ था, लेकिन उन्होंने धर्म और कर्तव्य को व्यक्तिगत सुख से ऊपर रखा। यही कारण है कि श्रीराम केवल एक राजा नहीं, बल्कि मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए। उनका जीवन यह सिखाता है कि धर्म का पालन कभी-कभी कठिन अवश्य होता है, लेकिन अंततः वही व्यक्ति और समाज दोनों के लिए कल्याणकारी सिद्ध होता है।

वाल्मीकि रामायण में धर्म को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से जोड़ा गया है। वहाँ धर्म केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि आदर्श जीवन जीने की कला है। श्रीराम का चरित्र सत्य, त्याग, कर्तव्य और मर्यादा का प्रतीक है। उन्होंने हर परिस्थिति में धर्म का साथ दिया, चाहे इसके लिए उन्हें व्यक्तिगत कष्ट ही क्यों न सहना पड़ा। उनका जीवन यह संदेश देता है कि धर्म का वास्तविक अर्थ अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करना है।

यदि श्रीराम धर्म के आदर्श स्वरूप हैं, तो लक्ष्मण धर्म के प्रति पूर्ण समर्पण के प्रतीक हैं। उन्होंने चौदह वर्षों तक अपने बड़े भाई की सेवा को ही अपना जीवन बना लिया। वनवास के दौरान उन्होंने आराम, सुख-सुविधाओं और व्यक्तिगत इच्छाओं का त्याग किया। उनका जीवन यह दिखाता है कि धर्म केवल बड़े-बड़े कार्यों में ही नहीं, बल्कि निस्वार्थ सेवा और समर्पण में भी प्रकट होता है। लक्ष्मण का त्याग और अनुशासन यह बताता है कि सच्चा धर्म व्यक्ति को अपने स्वार्थ से ऊपर उठने की प्रेरणा देता है। भरत का चरित्र भी धर्म की महानता का अद्भुत उदाहरण है। जब उन्हें अयोध्या का राज्य प्राप्त हो सकता था, तब उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया। उन्होंने श्रीराम की खड़ाऊँ को सिंहासन पर स्थापित कर स्वयं एक सेवक की तरह जीवन व्यतीत किया। सत्ता और वैभव का त्याग करके उन्होंने यह सिद्ध किया कि धर्म का आधार लोभ और स्वार्थ नहीं, बल्कि प्रेम और कर्तव्य है। भरत का जीवन बताता है कि सच्चा धर्म व्यक्ति को विनम्र और त्यागी बनाता है। शत्रुघ्न का जीवन भी धर्म की एक उच्चतम अभिव्यक्ति है। वे बाहरी रूप से राजकुमार की भूमिका निभाते रहे, लेकिन भीतर से अपने भाइयों के वियोग का दुख सहते रहे। उन्होंने अपने व्यक्तिगत दुःख को कभी सार्वजनिक नहीं होने दिया और राज्य तथा प्रजा के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूरी निष्ठा से किया। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि धर्म केवल भावनाओं का विषय नहीं, बल्कि कठिन परिस्थितियों में भी जिम्मेदारियों का निर्वहन करने की क्षमता है।

भारतीय दर्शन में धर्म को केवल सामाजिक व्यवस्था तक सीमित नहीं रखा गया है। महर्षि कणाद ने धर्म को मोक्ष का साधन माना है। उनके अनुसार धर्म वह है जो व्यक्ति को इस लोक में सुख, यश और सम्मान प्रदान करे तथा परलोक में आत्मिक उन्नति और मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करे। यह दृष्टिकोण धर्म को केवल व्यवहारिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक महत्व भी प्रदान करता है। धर्म मनुष्य को यह समझने में सहायता करता है कि जीवन केवल भौतिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है। उसके भीतर एक आत्मिक आयाम भी है, जिसकी उन्नति उतनी ही आवश्यक है जितनी बाहरी सफलता। मनुष्य के चरित्र निर्माण में धर्म की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। धर्म व्यक्ति को आत्मसंयम, अनुशासन और नैतिकता का पाठ पढ़ाता है। वह उसे सिखाता है कि इच्छाओं और भावनाओं पर नियंत्रण रखना क्यों आवश्यक है। जब व्यक्ति धर्म के मार्ग पर चलता है, तब उसके भीतर धैर्य, क्षमा, दया और सहिष्णुता जैसे गुण विकसित होते हैं। ये गुण न केवल उसके व्यक्तिगत जीवन को सुखद बनाते हैं, बल्कि समाज में भी सकारात्मक वातावरण का निर्माण करते हैं।

मनुस्मृति में धर्म के दस प्रमुख लक्षण बताए गए हैं—धैर्य, क्षमा, दया, चोरी न करना, पवित्रता, इंद्रिय-निग्रह, सात्विक बुद्धि, अध्यात्म विद्या, सत्य और क्रोध का त्याग। यदि कोई व्यक्ति इन गुणों को अपने जीवन में अपनाता है, तो वह निश्चित रूप से एक श्रेष्ठ मनुष्य बन सकता है। इन गुणों का महत्व आज के समय में और भी बढ़ गया है, जब भौतिक प्रगति के साथ-साथ नैतिक चुनौतियाँ भी बढ़ रही हैं।

आधुनिक युग में धर्म की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। आज विज्ञान और तकनीक ने जीवन को सुविधाजनक बना दिया है, लेकिन मानसिक तनाव, असहिष्णुता और स्वार्थ भी बढ़े हैं। ऐसे समय में धर्म का वास्तविक स्वरूप हमें संतुलन प्रदान कर सकता है। धर्म हमें याद दिलाता है कि सफलता केवल धन और पद प्राप्त करने में नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और मानवता की सेवा में भी निहित है। यदि धर्म को उसके मूल स्वरूप में समझा जाए, तो वह समाज में शांति, सद्भाव और नैतिक जागरूकता स्थापित करने का सबसे प्रभावी माध्यम बन सकता है।

प्रार्थना, ध्यान, योग, पूजा, व्रत और त्योहार धर्म की अभिव्यक्ति के विभिन्न रूप हैं। इनका उद्देश्य केवल परंपरा का निर्वहन नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर आत्मचिंतन और आत्मशुद्धि की भावना जागृत करना है। जब व्यक्ति नियमित रूप से आध्यात्मिक अभ्यास करता है, तब उसका मन अधिक शांत, संतुलित और सकारात्मक बनता है। वह अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को बेहतर ढंग से समझ पाता है।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

प्रधानमंत्री के तौर पर श्री नरेन्द्र मोदी के 12 वर्ष : अहमदाबाद गांधीनगर मेट्रो ने गुजरात की शहरी कनेक्टिविटी को दी नई रफ्तार

▸▸ अक्टूबर 2022 से मई 2026 तक 13 करोड़ से अधिक लोगों ने की मेट्रो में यात्रा, दैनिक यात्रियों की संख्या 1.6 लाख तक पहुंची

▸▸ 68.28 किमी के नेटवर्क और 54 स्टेशनों के साथ अहमदाबाद मेट्रो परियोजना बनी गुजरात के आधुनिक सार्वजनिक परिवहन का मजबूत मॉडल

गांधीनगर : कनेक्टिविटी किसी भी शहर की प्रगति का मापदंड होती है। एक आधुनिक और एकीकृत परिवहन प्रणाली सीधे तौर पर विकास, रोजगार, पर्यटन और लोगों के जीवन की गुणवत्ता के साथ जुड़ा होता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गत 12 वर्षों के दौरान देश में कनेक्टिविटी और परिवहन क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन देखा गया है। गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने राज्य में विश्व स्तरीय मेट्रो नेटवर्क की परिकल्पना की थी, जिसका उद्देश्य यातायात के दबाव में कमी करना, शहरों के बीच कनेक्टिविटी को बेहतर बनानाऔर कुशल सार्वजनिक परिवहन प्रणाली के जरिए शहरी विकास को एक नई गति देना था।

इस विजन का परिणाम यह हुआ कि आज अहमदाबाद-गांधीनगर मेट्रो सेवा तेज, सुरक्षित और विश्वसनीय सार्वजनिक परिवहन के एक शानदार उदाहरण के रूप में उभरी है। अहमदाबाद मेट्रो रेल प्रोजेक्ट के फेज-1 और फेज-2 के सफल कार्यान्वयन के बाद आज 68.28 किलोमीटर लंबे नेटवर्क और 54 स्टेशनों के साथ अहमदाबाद-गांधीनगर मेट्रो लाखों नागरिकों के दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गई है। अहमदाबाद महानगर पालिका (एएमसी), गांधीनगर महानगर पालिका (जीएमसी), अहमदाबाद म्युनिसिपल ट्रांसपोर्ट सर्विस (एएमटीएस), बस रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (बीआरटीएस) जैसे स्थानीय और रेलवे जैसे राष्ट्रीय संस्थानों के साथ मजबूत तालमेल के जरिए यात्रियों को लास्ट-माइल कनेक्टिविटी दी जा रही है, और अब तक 200 से अधिक बसें मेट्रो स्टेशनों से होकर गुजरती हैं।

मेट्रो को मिला जनविश्वास का साथ : दैनिक यात्रियों की संख्या 1.6 लाख तक पहुंची

गुजरात सरकार के 'ईज ऑफ लिविंग' यानी जीवन जीने की सुगमता के मंत्र को साकार करते हुए 68.28 किमी लंबा मेट्रो रेल नेटवर्क अहमदाबाद और गांधीनगर के नागरिकों की सुविधा में वृद्धि करने के साथ ही समय की बचत भी कर रहा है। नतीजतन, आज लाखों यात्री मेट्रो सेवा का लाभ उठा रहे हैं। जहां, वर्ष 2023 में रोजाना औसतन 69 हजार यात्रियों ने मेट्रो सेवा का लाभ उठाया था, वहीं 2024 में यह आंकड़ा बढ़कर 1.01 लाख और 2025 में 1.33 लाख तक पहुंच गया। वर्ष 2026 के मई महीने तक दैनिक यात्रियों की संख्या 1.53 लाख तक पहुंच चुकी है। यह दिखाता है कि आज अहमदाबाद-गांधीनगर के नागरिकों के लिए मेट्रो केवल परिवहन का एक माध्यम ही नहीं, बल्कि तेज, किफायती और विश्वसनीय यात्रा के लिए एक पसंदीदा विकल्प भी बन गई है।

अक्टूबर 2022 से मई 2026 तक 13 करोड़ से अधिक लोगों ने की मेट्रो में यात्रा

अहमदाबाद-गांधीनगर मेट्रो सेवा के कारण यात्रियों को किफायती और कुशल शहरी परिवहन का एक शानदार अनुभव मिला है। मेट्रो सेवा के मिले व्यापक समर्थन का अंदाजा कुल यात्रियों के आंकड़ों से लगाया जा सकता है। अक्टूबर 2022 में मेट्रो सेवा के विस्तार के बाद, मई 2026 तक कुल 13.81 करोड़ लोगों ने मेट्रो में यात्रा की है। आज, हर महीने लाखों विद्यार्थी, कर्मचारी और पर्यटन अपने दैनिक आवागमन के लिए मेट्रो को प्राथमिकता दे रहे हैं। यह आंकड़ा मेट्रो की बढ़ती लोकप्रियता के साथ-साथ अहमदाबाद-गांधीनगर में सार्वजनिक परिवहन क्षेत्र में आए बदलाव को भी दर्शाता है।

मेगा इवेंट के दौरान मेट्रो बनी लोगों की पहली पसंद

इस वर्ष अहमदाबाद के नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में आयोजित आईपीएल मैच, अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच और अन्य बड़े कार्यक्रमों के दौरान लाखों लोगों ने मेट्रो से सफर को प्राथमिकता दी। 30 अप्रैल 2026 को आयोजित आईपीएल मैच के दौरान 2.26 लाख से अधिक यात्रियों ने मेट्रो सेवा का उपयोग किया था, जबकि 21 मई 2026 को आयोजित आईपीएल मैच के दौरान 2.22 लाख तथा 18 फरवरी 2026 के विश्व कप के मैच के दौरान 2.21 लाख से अधिक लोगों ने मेट्रो में यात्रा की। इसके अलावा, 25 और 26 जनवरी 2025 को आयोजित कोल्डप्ले कॉन्सर्ट के दौरान कुल 4.11 लाख से अधिक लोगों ने मेट्रो सेवा का लाभ उठाया था।

मेट्रो नेटवर्क के विस्तार के साथ राज्य की शहरी परिवहन प्रणाली और मजबूत होगी

प्रधानमंत्री का विजन मेट्रो के माध्यम से खास तौर पर युवाओं, स्कूल-कॉलेज जाने वाले छात्रों तथा आर्थिक रूप से कम आय वाले ऐसे वर्ग, जो घनी आबादी वाले इलाकों में रहते हैं और शहर के अन्य इलाकों में काम करने के लिए जाते हैं, को विशेष सुविधाएं प्रदान करना था। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मेट्रो का एलाइनमेंट उसी हिसाब से किया गया है। यात्रियों की बढ़ती जरूरतों को ध्यान में रखकर अहमदाबाद मेट्रो नेटवर्क के विस्तार का कार्य तेजी से आगे बढ़ रहा है। गिफ्ट सिटी एक्सटेंशन, एयरपोर्ट कनेक्टिविटी और अहमदाबाद मेट्रो फेज-3 के तहत कुल 68 किलोमीटर से अधिक नए कॉरिडोर बनाने का आयोजन किया गया है, जो भारत सरकार के पास मंजूरी के विभिन्न चरणों में है।

इस विस्तार के पूरा होने के बाद मेट्रो नेटवर्क शहर के और अधिक क्षेत्रों को कवर कर लेगा और गुजरात के आर्थिक तथा शहरी विकास को एक नई रफ्तार देगा। इसके अलावा, लगभग 40 किमी लंबे नेटवर्क और 38 स्टेशनों के साथ सूरतर मेट्रो प्रोजेक्ट भी शहर की परिवहन व्यवस्था को एक नई दिशा दे रहा है। हाल ही में, 15 किमी के रूट पर इसका ट्रायल रन सफलतापूर्वक शुरू किया गया है।

अहमदाबाद मेट्रो प्रोजेक्ट से राज्य में आधुनिक सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था और भी मजबूत बन रही है। आज, मेट्रो गुजरात के शहरी विकास और जनसुविधा का एक महत्वपूर्ण आधारस्तंभ बन चुकी है। नागरिकों की यात्रा को और भी आसान, तेज और सुगम बनाने के साथ ही मेट्रो जैसी आधुनिक सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था गुजरात को 'विककसित भारत' के संकल्प की ओर आगे बढ़ाने में अहम योगदान दे रही है।

बोटाद और गढ़डा में विकास और जन कल्याण की त्रिवेणी: केंद्रीय राज्य मंत्री निमुबेन बांभणिया की अध्यक्षता में विभिन्न कार्यक्रमों का सफल आयोजन

▸▸ "प्रगति पथ यात्रा" के तहत बोटाद में विकास कार्यों का निरीक्षण; गढ़डा में 52 लाख के मिनी फायर टेंडर का लोकार्पण।

▸▸ "एक पेड़ मां के नाम" अभियान के तहत सामूहिक वृक्षारोपण और स्वच्छता अभियान का आयोजन।

▸▸ 600 किसानों को सहायता पत्र और 590 क्विंटल प्रमाणित मूंगफली बीज का वितरण।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के सफल नेतृत्व के 12 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर बोटाद जिले में "प्रगति पथ यात्रा", स्वच्छता, वृक्षारोपण और किसान कल्याण कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया गया। केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री तथा बोटाद की सांसद श्रीमती निमुबेन बांभणिया की अध्यक्षता में आयोजित इन कार्यक्रमों के माध्यम से जिले में हुए सर्वांगीण विकास और जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रभाव को उजागर किया गया।

"प्रगति पथ यात्रा" के अंतर्गत केंद्रीय मंत्री ने कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय और मॉडल स्कूल का दौरा कर छात्राओं को मिल रही आधुनिक शैक्षणिक व आवासीय सुविधाओं की समीक्षा की। इसके बाद उन्होंने सामाजिक वानिकी विभाग द्वारा मियावाकी पद्धति से विकसित 'वन कवच' (1.50 हेक्टेयर में फैले 15 हजार से अधिक पौधे) और मधुसूदन डेयरी के आधुनिक प्रोसेसिंग प्लांट का निरीक्षण कर सहकारिता व पर्यावरण के क्षेत्र में हो रहे कार्यों की सराहना की।

इसी श्रृंखला में गढ़डा में नागरिक सुरक्षा को सुदृढ़ करते हुए संकरी गलियों के लिए उपयोगी 52 लाख की लागत के मिनी फायर टेंडर का लोकार्पण किया गया। साथ ही "स्वच्छ भारत मिशन" और "एक पेड़ मां के नाम 3.0" अभियान के तहत गढ़डा बस स्टैंड परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया गया और विभिन्न प्रजातियों के 100 से अधिक पौधों का सामूहिक रोपण किया गया। कृषि और किसान कल्याण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से गढ़डा APMC में 'नेशनल मिशन ऑन एडिबल ऑयलसीड' (NMEO) के तहत बीज वितरण कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें केंद्रीय मंत्री के हाथों 598 किसानों को 590 क्विंटल (GG-35 जाति का) प्रमाणित मूंगफली बीज और करीब 600 किसानों को सहायता मंजूरी पत्र सौंपे गए। इस दौरान किसानों को जैविक खेती, नैनो यूरिया, 'कृषि प्रगति ऐप' और पीएम किसान सम्मान निधि के लिए आवश्यक सेल्फ ई-केवाईसी प्रक्रिया के बारे में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा विस्तृत मार्गदर्शन भी दिया गया।

इस अवसर पर बोटाद के कलेक्टर श्री हर्षद वोरा, जिला विकास अधिकारी श्री बी.सी. परमार, प्रांत अधिकारी सुश्री आरती गोस्वामी सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी, स्थानीय जनप्रतिनिधि, सामाजिक अग्रणी और बड़ी संख्या में नागरिक एवं किसान उपस्थित रहे।

आधी रात को यूनियन कार्यालयों के ताले तोड़ने को लेकर विवाद, 9,900 लापता फाइलों को लेकर सवाल उठे

▸▸ सूरत नगर निगम के यूनियन कार्यालयों के ताले मध्य जोन की उपायुक्त निधि सिवाच के आदेश पर आधी रात 12 बजे तोड़ दिए गए ।

▸▸ पुलिस ने यूनियनों द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत पर कोई कार्रवाई नहीं की है, केवल शिकायतकर्ताओं के बयान लिए गए हैं, लेकिन पुलिस आधी रात को ताले तोड़ने वालों के बयान कब लेगी?

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत

नासिर नगर के मकान गिराए जाने और सतर्क मीडिया द्वारा निगम एवं पुलिस अधिकारियों को कटघरे में खड़ा किए जाने के बाद कानून कहां रह गया? बिना किसी सूचना के रातोंरात यूनियन कार्यालय के ताले तोड़े जाने पर कानून कहां था? कानून की सीमाओं की बात करने वाला अधिकारी कानून के बाहर कैसे काम कर सकता है? यूनियन कार्यालय के ताले तोड़ने में भी केंद्रीय क्षेत्र के अधिकारियों ने उपायुक्त निधि सिवाच के आदेश पर कार्रवाई की है। निधि सिवाच और केंद्रीय क्षेत्र के अधिकारियों को यह बताना चाहिए कि किसके आदेश पर यूनियन कार्यालय के ताले तोड़े गए।

यूनियन कार्यालयों को खाली कराने के दौरान लगभग 9900 फाइलें गुम हो गई हैं। नगर निगम ने यूनियन कार्यालयों का सामान ले जाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों से ट्रक मंगवाए थे। यूनियन कार्यालयों का सामान खुले में बिखरा पड़ा था, इसलिए नगर निगम के अधिकारियों को यह खुलासा करना चाहिए कि इन ट्रकों में क्या-क्या भरा गया था। यह आवश्यक है कि गुम फाइलों की जांच कर रहे अधिकारी फाइलों को ढूंढने के लिए गहन जांच करें।

तीन साल बाद मिला अपनों का आंगन, एक तस्वीर ने बदल दी मासूम कबीर की जिंदगी

सागर। कभी-कभी जिंदगी ऐसी कहानियां लिखती है, जो किसी फिल्मी पटकथा से भी ज्यादा भावुक, प्रेरणादायक और अविश्वसनीय लगती हैं। मध्य प्रदेश के सागर जिले से सामने आई एक ऐसी ही घटना ने हजारों लोगों की आंखें नम कर दी हैं। एक मूक-बधिर बच्चा, जो तीन साल पहले अपने परिवार से बिछड़ गया था और जिसकी पहचान तक एक रहस्य बन चुकी थी, अब अपने माता-पिता की गोद में लौटने जा रहा है। इस असंभव लगने वाले मिलन को संभव बनाया एक महिला की अथक मेहनत, धैर्य और मानवीय संवेदनाओं ने, जिन्होंने हार मानने के बजाय उम्मीद का दामन थामे रखा और अंततः एक बिछड़े परिवार को फिर से जोड़ दिया। करीब तीन वर्ष पहले की बात है। गुजरात का रहने वाला एक मासूम बच्चा किसी तरह अपने परिवार से बिछड़ गया और भटकते-भटकते मध्य प्रदेश के नीमच रेलवे स्टेशन तक पहुंच गया। बच्चा न तो सुन सकता था और न ही बोल सकता था। उसके पास कोई पहचान पत्र नहीं था, न ही वह अपना नाम या घर का पता बता सकता था। ऐसे में उसके परिवार तक पहुंचना लगभग असंभव दिखाई दे रहा था। रेलवे स्टेशन पर मिले इस बच्चे को बाल कल्याण समिति के संरक्षण में लिया गया और बाद में बेहतर देखभाल के लिए सागर स्थित घरौंदा आश्रम भेज दिया गया।

आश्रम पहुंचने के बाद बच्चे को नया नाम दिया गया और उसकी देखभाल शुरू हुई। लेकिन उसके असली परिवार की तलाश भी लगातार जारी रही। पुलिस रिकॉर्ड खंगाले गए, विभिन्न राज्यों में गुमशुदगी के मामलों की जांच की गई, पहचान स्थापित करने के लिए तकनीकी उपायों का सहारा लिया गया, लेकिन हर प्रयास बेनतीजा साबित हुआ। सबसे बड़ी समस्या यह थी कि किसी भी पुलिस रिकॉर्ड में इस बच्चे की गुमशुदगी दर्ज नहीं थी। न कोई शिकायत, न कोई सुराग और न कोई ऐसा संकेत जिससे उसके घर तक पहुंचा जा सके।

समय बीतता गया, लेकिन आश्रम की संचालिका प्रीति यादव ने उम्मीद नहीं छोड़ी। उनके लिए यह बच्चा केवल आश्रम का एक सदस्य नहीं था, बल्कि एक ऐसी जिम्मेदारी था जिसे उसके असली परिवार तक पहुंचाना जरूरी था। उन्होंने बच्चे की तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा कीं, विभिन्न जिलों और राज्यों में लोगों से संपर्क किया और कई बार उसे अलग-अलग स्थानों पर लेकर भी गईं, ताकि शायद कोई उसे पहचान सके। लेकिन हर बार निराशा ही हाथ लगी।

जब सारे पारंपरिक तरीके असफल हो गए, तब प्रीति यादव ने एक बिल्कुल अलग रास्ता अपनाया। उन्होंने सोचा कि यदि बच्चा बोल नहीं सकता, तो उसकी यादें ही उसकी पहचान बन सकती हैं। इसी सोच के साथ उन्होंने उसे लैपटॉप पर देश के विभिन्न शहरों, धार्मिक स्थलों, ऐतिहासिक इमारतों और प्रसिद्ध स्थानों की तस्वीरें दिखानी शुरू कीं। यह प्रक्रिया एक-दो दिन नहीं, बल्कि महीनों तक चलती रही। हर तस्वीर के साथ यह उम्मीद रहती कि शायद किसी दृश्य को देखकर बच्चे के चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया दिखाई दे।

फिर एक दिन वह क्षण आया जिसने तीन वर्षों की खोज को नई दिशा दे दी। लैपटॉप स्क्रीन पर एक मस्जिद की तस्वीर दिखाई गई। जैसे ही बच्चे की नजर उस तस्वीर पर पड़ी, उसके चेहरे के भाव अचानक बदल गए। वह उत्साह से भर उठा और इशारों के माध्यम से बताने लगा कि यह स्थान उसके लिए परिचित है। उसने संकेतों से समझाने की कोशिश की कि यह मस्जिद उसके घर के पास स्थित है। प्रीति यादव ने उसी समय महसूस कर लिया कि उन्हें वह सुराग मिल गया है जिसकी तलाश वर्षों से थी।

इसके बाद शुरू हुआ उस तस्वीर के पीछे छिपे स्थान की पहचान का प्रयास। मस्जिद की तस्वीर के आधार पर स्थानीय लोगों, धार्मिक समिति के सदस्यों और सामाजिक समूहों से संपर्क किया गया। बच्चे की तस्वीरें साझा की गईं और जानकारी विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म तथा स्थानीय नेटवर्क के माध्यम से फैलने लगी। धीरे-धीरे यह तस्वीरें गुजरात के आनंद जिले तक पहुंच गईं।

आनंद जिले के एक साधारण मजदूर परिवार ने जब तस्वीर देखी, तो उनकी दुनिया जैसे थम गई। तस्वीर में दिखाई दे रहा बच्चा कोई और नहीं, बल्कि उनका अपना बेटा कबीर राइन था, जो तीन साल पहले अचानक लापता हो गया था। गरीबी, अशिक्षा और संसाधनों की कमी के कारण परिवार उसके गुम होने के बाद कोई प्रभावी कानूनी कार्रवाई नहीं कर पाया था।

वडोदरा स्टेशन पर इंजीनियरिंग कार्य हेतु लिए गये ब्लॉक के चलते कुछ ट्रेनों के ठहराव में अस्थायी परिवर्तन

यात्रियों को बेहतर, सुरक्षित एवं आधुनिक रेल सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे द्वारा वडोदरा स्टेशन पर यार्ड रीमॉडलिंग तथा नई इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग (EI) प्रणाली स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। इस महत्त्वाकांक्षी परियोजना के तहत निर्धारित नॉन-इंटरलॉकिंग कार्य के कारण कुछ ट्रेनों के वडोदरा स्टेशन पर निर्धारित ठहराव में अस्थायी परिवर्तन किया गया है।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार, रेल प्रशासन द्वारा यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए प्रभावित ट्रेनों के वैकल्पिक ठहराव निकटवर्ती स्टेशनों पर उपलब्ध कराए गए हैं, जिससे यात्रियों को न्यूनतम असुविधा हो।

प्रभावित ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है—

विश्वामित्री (VS) स्टेशन पर अस्थायी ठहराव प्रदान किया जाएगा:

▸▸ ट्रेन संख्या 09208 भावनगर टर्मिनस–बांद्रा टर्मिनस स्पेशल दिनांक 18 जून 2026 को वडोदरा के स्थान पर विश्वामित्री स्टेशन पर 23:15 बजे से 23:20 बजे तक ठहरेगी।

▸▸ ट्रेन संख्या 09207 बांद्रा टर्मिनस–भावनगर टर्मिनस स्पेशल दिनांक 19 जून 2026 को विश्वामित्री स्टेशन पर 15:40 बजे से 15:45 बजे तक ठहरेगी।

▸▸ ट्रेन संख्या 09017 बांद्रा टर्मिनस–वेरावल स्पेशल दिनांक 21 जून 2026 को विश्वामित्री स्टेशन पर 20:40 बजे से 20:45 बजे तक ठहरेगी।

▸▸ ट्रेन संख्या 09018 वेरावल–बांद्रा टर्मिनस स्पेशल दिनांक 22 जून 2026 को विश्वामित्री स्टेशन पर 22:00 बजे से 22:05 बजे तक ठहरेगी।

▸▸ ट्रेन संख्या 19016 पोरबंदर–दादर सौराष्ट्र एक्सप्रेस दिनांक 22 एवं 23 जून 2026 को विश्वामित्री स्टेशन पर 10:09 बजे से 10:11 बजे तक ठहरेगी।

▸▸ ट्रेन संख्या 19015 दादर–पोरबंदर सौराष्ट्र एक्सप्रेस दिनांक 23 एवं 24 जून 2026 को विश्वामित्री स्टेशन पर 17:42 बजे से 17:43 बजे तक ठहरेगी।

▸▸ ट्रेन संख्या 22963 बांद्रा टर्मिनस–भावनगर टर्मिनस सुपरफास्ट दिनांक 22 जून 2026 को विश्वामित्री स्टेशन पर 22:10 बजे से 22:15 बजे तक ठहरेगी।

▸▸ ट्रेन संख्या 22935 बांद्रा टर्मिनस–पालीताना एक्सप्रेस दिनांक 23 जून 2026 को विश्वामित्री स्टेशन पर 22:10 बजे से 22:15 बजे तक ठहरेगी।

▸▸ ट्रेन संख्या 22989 बांद्रा टर्मिनस–महुवा एक्सप्रेस दिनांक 24 जून 2026 को विश्वामित्री स्टेशन पर 22:10 बजे से 22:15 बजे तक ठहरेगी।

बाजवा (BJW) स्टेशन पर अस्थायी ठहराव प्रदान किया जाएगा:

▸▸ ट्रेन संख्या 19255 सूरत–महुवा एक्सप्रेस दिनांक 23 जून 2026 को बाजवा स्टेशन पर 23:30 बजे से 23:35 बजे तक ठहरेगी।

▸▸ ट्रेन संख्या 19256 महुवा–सूरत एक्सप्रेस दिनांक 23 जून 2026 को बाजवा स्टेशन पर 04:00 बजे से 04:05 बजे तक ठहरेगी।

पश्चिम रेलवे यात्रियों से अनुरोध करती है कि यात्रा प्रारंभ करने से पूर्व अपनी ट्रेन की अद्यतन जानकारी रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट, NTES अथवा रेलवे हेल्पलाइन के माध्यम से प्राप्त कर लें।

रेल प्रशासन को विश्वास है कि इस महत्त्वपूर्ण अधोसंरचना विकास कार्य के पूर्ण होने के पश्चात वडोदरा स्टेशन पर रेल परिचालन और अधिक सुरक्षित, आधुनिक तथा दक्ष बनेगा, जिससे यात्रियों को दीर्घकालिक लाभ प्राप्त होगा।

नासिरनगर विध्वंस विवाद गांधीनगर तक पहुंचा राज्य सरकार ने गुप्त जांच के आदेश दिए

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

सूरत नगर निगम और एसओजी (विशेष अभियान समूह) के उच्च अधिकारी, जो सूरत की किसी अज्ञात शक्ति के इशारे पर मात्र "सहयोगी" बनकर नासिर नगर में मकानों को ध्वस्त करने गए थे, इस मामले में पूरी तरह असमंजस में हैं। अब जब इस विध्वंस का विवाद गांधीनगर तक पहुंच गया है, तो राज्य सरकार ने मामले की गंभीरता को देखते हुए पूरी घटना की अत्यंत गुप्त जांच का आदेश दिया है। साथ ही, महापौर और अन्य पदाधिकारियों को गांधीनगर बुलाया गया है। इसके अलावा, चूंकि सूरत पुलिस के अधिकारी स्वयं संदेह के घेरे में हैं, इसलिए सूरत पुलिस को इस पूरी जांच प्रक्रिया से पूरी तरह अलग रखा गया है। सूरत ग्रामीण के शीर्ष पुलिस अधिकारी को इस पूरे घोटाले की सच्चाई सामने लाने की विशेष जिम्मेदारी सौंपी गई है। सरकार के आदेशानुसार, रेंज आईजी की टीम फोन कॉल और अन्य माध्यमों से स्थानीय स्तर पर विध्वंस के पीछे की साजिश के सबूत और सच्चाई को अत्यंत गोपनीय तरीके से जुटा रही है।

जांच पूरी होने के बाद, इस पर एक विस्तृत गोपनीय रिपोर्ट सीधे गांधीनगर गृह विभाग को सौंपी जाएगी। दूसरी ओर, प्रमुख विपक्षी कांग्रेस भी अब इस गंभीर और संवेदनशील मुद्दे पर उतर आई है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अमित चावड़ा ने इस घटना को गरीबों के खिलाफ एक बड़ी साजिश बताते हुए राज्य सरकार पर हमला बोला है। इस मामले में सरकार को खुली चेतावनी देते हुए कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने तीन दिन का अल्टीमेटम दिया है और कहा है

कि दोषियों के खिलाफ पुलिस शिकायत दर्ज कराई जाए, भूमि हड़पने का मामला दर्ज किया जाए। इसके अलावा, इस साजिश में शामिल सभी लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की जाए, अन्यथा तीन दिन बाद प्रदेश कांग्रेस सूरत के स्थानीय लोगों के साथ मिलकर उग्र आंदोलन करेगी।

सूत्रों ने यह भी बताया कि नव नियुक्त महापौर, उप महापौर, स्थायी समिति के अध्यक्ष और सत्ताधारी दल के नेता गांधीनगर पहुंच गए हैं और बंद कमरे में बैठक कर विध्वंस पर चर्चा कर रहे हैं।

द्वारका-भीमराणा सेक्शन में इन्फ्रास्ट्रक्चर कार्य के कारण कुछ ट्रेनों का परिचालन प्रभावित रहेगा

पश्चिम रेलवे के राजकोट मंडल के अंतर्गत द्वारका एवं भीमराणा स्टेशनों के बीच वर्षा जल की उचित निकासी हेतु पुलिया निर्माण कार्य के अंतर्गत आरसीसी बॉक्स स्थापित किए जाने का महत्वपूर्ण आधारभूत संरचना कार्य किया जाएगा। इस कार्य के लिए ब्लॉक लिया जाएगा।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार, इस ब्लॉक के चलते प्रभावित होने वाली ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है :

1) ट्रेन संख्या 19209 भावनगर टर्मिनस–ओखा एक्सप्रेस, जो 10 जून, 2026 को भावनगर टर्मिनस से प्रस्थान करेगी, द्वारका स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट की जाएगी। अतः यह ट्रेन द्वारका एवं ओखा स्टेशनों के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

2) ट्रेन संख्या 19210 ओखा–भावनगर टर्मिनस एक्सप्रेस, जो 11 जून, 2026 को द्वारका स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट की जाएगी। अतः यह ट्रेन ओखा एवं द्वारका स्टेशनों के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

3) ट्रेन संख्या 19252 ओखा–वेरावल एक्सप्रेस, जो 11 जून, 2026 को ओखा से अपने निर्धारित समय से 15 मिनट विलंब से रवाना होगी।

पश्चिम रेलवे यात्रियों से अनुरोध करता है कि यात्रा से पूर्व ट्रेनों की समय-सारणी एवं परिचालन संबंधी अद्यतन जानकारी रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in अथवा NTES के माध्यम से अवश्य प्राप्त कर लें।

उज्ज्वला योजना में बड़ा बदलाव: सब्सिडी वाले एलपीजी सिलेंडरों का वार्षिक कोटा 9 से घटाकर 4 कर दिया गया है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

देश भर में ईंधन की बढ़ती कीमतों के कारण घरेलू एलपीजी की कीमतों में वृद्धि के मद्देनजर, मोदी सरकार ने प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई) के तहत प्रदान किए जाने वाले रियायती सिलेंडरों का वार्षिक कोटा नौ से घटाकर चार कर दिया है। सरकार गरीब परिवारों के लिए रियायती खाना पकाने के गैस सिलेंडरों का वार्षिक कोटा घटाकर मात्र चार कर रही है, जिससे गरीब परिवारों को कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।

रविवार को 14.2 किलोग्राम एलपीजी सिलेंडर की कीमत में 29 रुपये की बढ़ोतरी के बाद इस फैसले की घोषणा की गई। बाद में जारी बयान में इस बढ़ोतरी का जिक्र किया गया। सरकार के इस फैसले से ग्रामीण इलाकों की महिलाओं को सबसे ज्यादा नुकसान होगा। मोदी सरकार ने पारंपरिक चूल्हों से होने वाले प्रदूषण से बचाव के लिए यह योजना शुरू की थी और इसका व्यापक प्रचार भी किया गया था।

सरकार ने यह निर्णय क्यों लिया? मंत्रालय के अधिकारियों के अनुसार, सरकारी तेल कंपनियों को अभी भी 14.2 किलोग्राम एलपीजी रिफिल पर 700 रुपये, पेट्रोल पर 6 रुपये प्रति लीटर और डीजल पर 30 रुपये प्रति लीटर का घाटा (अंडर-रिकवरी) हो रहा है। सब्सिडी बिल में वृद्धिः पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष के कारण अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा बाजार में भारी अस्थिरता आई है। 2025-26 में घरेलू एलपीजी पर कुल घाटा 60,000 करोड़ रुपये था। पिछले वर्ष यह घाटा 41,338 करोड़ रुपये था। इस घाटे की भरपाई के लिए केंद्रीय मंत्रिमंडल ने तेल कंपनियों को 30,000 करोड़ रुपये का मुआवजा देने की मंजूरी दी थी। बढ़ते बजटीय बोझ को संभालने के लिए सरकार ने सब्सिडी का दायरा कम कर दिया है।

उज्ज्वला योजना और औसत खपत आंकड़ों पर आधारित तर्कः सरकार का दावा है कि प्रति वर्ष चार सिलेंडरों की सीमा उज्ज्वला योजना के अंतर्गत आने वाले परिवारों की औसत खपत के अनुरूप है।

जनहित और विकास को मिली नई दिशा, जसदण विंछिया में प्रशासनिक समीक्षा से तेज होंगे विकास कार्य

राजकोट। ग्रामीण विकास, भूमि प्रबंधन और स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में राजकोट जिले के जसदण-विंछिया क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक बैठक आयोजित की गई, जिसमें विकास योजनाओं की प्रगति, भूमि संबंधी मामलों और स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थिति की व्यापक समीक्षा की गई। जसदण स्थित तालुका सेवा सदन में आयोजित भूमि समिति एवं रोगी कल्याण समिति की संयुक्त बैठक में विभिन्न विभागों के अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों और समिति सदस्यों ने भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता गुजरात सरकार के कैबिनेट मंत्री कुंवरजीभाई बावलिया ने की।

बैठक के दौरान प्रशासनिक व्यवस्था को अधिक जनोन्मुखी और विकास कार्यों को अधिक गति देने पर विशेष जोर दिया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में विकास परियोजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन, सरकारी भूमि के समुचित उपयोग और नागरिकों की समस्याओं के समयबद्ध समाधान को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। भूमि समिति की समीक्षा के दौरान गांव स्तर पर प्राप्त विभिन्न भूमि संबंधी आवेदनों, सरकारी जमीन के उपयोग, विकास परियोजनाओं के लिए भूमि आवंटन तथा जनहित के कार्यों में आने वाली बाधाओं का गंभीरता से परीक्षण किया गया। अधिकारियों ने क्षेत्र में चल रही परियोजनाओं की वर्तमान स्थिति से अवगत कराया और भविष्य की योजनाओं पर भी विचार-विमर्श किया।

बैठक को संबोधित करते हुए मंत्री कुंवरजीभाई बावलिया ने कहा कि राज्य सरकार का उद्देश्य विकास को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना है और इसके लिए प्रशासनिक पारदर्शिता तथा जवाबदेही बेहद आवश्यक है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं के विस्तार, आधारभूत संरचना के सुदृढ़ीकरण और सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के माध्यम से लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाने के प्रयास लगातार जारी हैं। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे जनहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए नागरिकों की समस्याओं का त्वरित और प्रभावी समाधान सुनिश्चित करें।

बैठक में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति भी प्रमुख एजेंडे में शामिल रही। रोगी कल्याण समिति की समीक्षा के दौरान क्षेत्र के अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों में उपलब्ध सुविधाओं, चिकित्सा सेवाओं की गुणवत्ता तथा मरीजों को मिलने वाली सुविधाओं का विस्तृत मूल्यांकन किया गया। मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार का लक्ष्य प्रत्येक नागरिक को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है और इसके लिए सरकारी अस्पतालों एवं स्वास्थ्य केंद्रों को लगातार सुदृढ़ किया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि अस्पतालों में आने वाले प्रत्येक मरीज को सम्मानजनक और सहज उपचार मिलना चाहिए, जिससे लोगों का सरकारी स्वास्थ्य व्यवस्था पर विश्वास और मजबूत हो। इस अवसर पर संथाली उप-जिला अस्पताल, जसदण सरकारी अस्पताल तथा विंछिया सरकारी अस्पताल सहित रोगी कल्याण समिति के अंतर्गत संचालित विभिन्न स्वास्थ्य संस्थानों के कार्यों की समीक्षा की गई। अस्पतालों में दवाओं की उपलब्धता, स्वच्छता व्यवस्था, चिकित्सा उपकरणों की स्थिति, चिकित्सकीय स्टाफ की उपलब्धता तथा मरीजों को प्रदान की जा रही सेवाओं पर विस्तार से चर्चा की गई। अधिकारियों को स्वास्थ्य सेवाओं में किसी भी प्रकार की कमी को दूर करने तथा मरीजों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए।

बैठक के दौरान विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने अपने-अपने विभागों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की और विकास कार्यों की वर्तमान स्थिति से अवगत कराया। कई लंबित परियोजनाओं पर भी चर्चा हुई तथा उन्हें शीघ्र पूरा करने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। मंत्री ने अधिकारियों से कहा कि विकास कार्यों में अनावश्यक विलंब से बचते हुए निर्धारित समयसीमा के भीतर योजनाओं को पूरा किया जाए, ताकि जनता को उनका लाभ समय पर मिल सके।

प्रशासनिक अधिकारियों ने भी क्षेत्र में चल रहे विकास कार्यों, सड़क निर्माण, बुनियादी सुविधाओं के विस्तार, ग्रामीण विकास योजनाओं तथा सार्वजनिक सेवाओं के सुधार से संबंधित जानकारी साझा की। बैठक में यह भी स्पष्ट किया गया कि सरकार विकास और जनकल्याण दोनों क्षेत्रों में संतुलित प्रगति सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है और इसके लिए प्रशासन तथा जनप्रतिनिधियों के बीच बेहतर समन्वय आवश्यक है।

बैठक में जसदण के प्रांत अधिकारी राहुल खंभारा, मामलतदार मेहुल बलिया, तालुका विकास अधिकारी हितेश वाघेला, बी. जे. दवे सहित विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी, जनप्रतिनिधि और समिति के सदस्य उपस्थित रहे। बैठक को क्षेत्र के विकास और स्वास्थ्य सेवाओं को नई दिशा देने वाला महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है, जिससे आने वाले समय में जनहित से जुड़े कार्यों को और अधिक गति मिलने की उम्मीद है।

जूनागढ़ रेलवे परिसर में 18 टाइप-II रेलवे क्वार्टर निर्माण कार्य पूर्ण,कर्मचारियों को मिलेगी बेहतर एवं आधुनिक आवासीय सुविधा

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि रेल कर्मचारियों के कल्याण एवं उन्हें बेहतर आवासीय सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए जूनागढ़ रेलवे परिसर में रेल भूमि विकास प्राधिकरण (RLDA) द्वारा निर्मित 18 टाइप-II रेलवे क्वार्टरों का निर्माण कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया गया है। सभी क्वार्टर अब उपयोग के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

उन्होंने बताया कि जूनागढ़ रेलवे परिसर में प्रस्तावित होटल निर्माण परियोजना के लिए किए गए समझौता ज्ञापन (MOU) के अंतर्गत रेलवे आवासों के प्रतिस्थापन स्वरूप इन क्वार्टरों का निर्माण किया जाना था। विभिन्न कारणों से वर्ष 2021 से यह कार्य लंबित था। भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन में निरंतर समन्वय एवं नियमित अनुवर्ती कार्रवाई के फलस्वरूप निर्माण कार्य को गति मिली तथा अंततः इसे सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया गया।

नवनिर्मित 18 टाइप-II क्वार्टर आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित हैं। इनके उपयोग में आने से रेलवे कर्मचारियों एवं उनके परिवारों को सुरक्षित, सुविधाजनक एवं बेहतर आवासीय वातावरण उपलब्ध होगा। साथ ही कर्मचारियों के जीवन स्तर में सुधार, कार्य संतुष्टि में वृद्धि तथा कार्यकुशलता एवं मनोबल को और सुदृढ़ करने में भी सहायता मिलेगी।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने कहा कि पश्चिम रेलवे का भावनगर मंडल कर्मचारियों के कल्याण एवं आधारभूत सुविधाओं के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। कर्मचारियों के लिए गुणवत्तापूर्ण आवासीय सुविधाएं उपलब्ध कराना मंडल की प्राथमिकताओं में शामिल है। जूनागढ़ में इस आवासीय परियोजना का पूर्ण होना इसी प्रतिबद्धता का प्रत्यक्ष उदाहरण है, जिससे कर्मचारियों एवं उनके परिवारों को दीर्घकालिक लाभ प्राप्त होगा। भावनगर मंडल द्वारा भविष्य में भी कर्मचारियों के हितों को ध्यान में रखते हुए आवासीय एवं अन्य कल्याणकारी सुविधाओं के विकास हेतु निरंतर प्रयास जारी रहेंगे।

वडोदरा मंडल में अंतर्राष्ट्रीय समपार जागरूकता दिवस पर रोड यूजर्स को किया गया जागरूक

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल द्वारा 09 जून 2026 को अंतर्राष्ट्रीय समपार जागरूकता दिवस (ILCAD) – 2026 मनाया गया। इस अवसर पर संरक्षा विभाग द्वारा रेलवे समपार फाटकों पर सुरक्षा के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाने तथा असावधानीवश होने वाली दुर्घटनाओं की रोकथाम के उद्देश्य से मंडल भर में विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के मार्गदर्शन में संरक्षा विभाग ने सिविल डिफेंस स्वयंसेवकों एवं क्षेत्रीय कर्मचारियों के सहयोग से मंडल के विभिन्न समपार फाटकों पर व्यापक जनसंपर्क एवं जागरूकता अभियान चलाया। अभियान के दौरान सड़क उपयोगकर्ताओं, पैदल यात्रियों तथा वाहन चालकों को रेलवे सुरक्षा नियमों के पालन एवं सुरक्षित व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतापनगर खंड स्थित समपार संख्या-1 स्पेशल पर सुरक्षा जागरूकता नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 20 सिविल डिफेंस स्वयंसेवकों ने भाग लिया। आकर्षक प्रस्तुति के माध्यम से अनधिकृत रूप से रेलवे लाइन पार करने, फाटक बंद होने के दौरान समपार पार करने तथा चेतावनी संकेतों की अनदेखी जैसे खतरनाक व्यवहारों के दुष्परिणामों को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित किया गया। इसके अतिरिक्त मंडल के विभिन्न समपार फाटकों पर रेलवे कर्मचारियों एवं सिविल डिफेंस स्वयंसेवकों ने आमजन से प्रत्यक्ष संवाद स्थापित कर सुरक्षा संबंधी पंपलेट एवं हैंडबिल वितरित किए। लोगों को रेलवे ट्रैक के निकट सतर्कता बरतने तथा समपार पार करते समय आवश्यक सुरक्षा नियमों का पालन करने के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

पश्चिम रेलवे के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस अवसर पर जागरूकता बैनर एवं प्रचार सामग्री भी प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शित की गई। अभियान के दौरान नागरिकों को समपार फाटक पार करने से पूर्व बरती जाने वाली सावधानियां, गेटमैन एवं रेलवे कर्मचारियों द्वारा पालन किये जाने वाले निर्देश आदि से सम्बंधित महत्वपूर्ण संदेश दिए गये।

वडोदरा मंडल के वरिष्ठ संरक्षा अधिकारी श्री शरद गौतम एवं संरक्षा अधिकारी नवीन यादव के अनुसार इस अभियान को जनता का उत्साहजनक सहयोग प्राप्त हुआ तथा बड़ी संख्या में लोगों तक रेलवे ने संरक्षा व सुरक्षा का संदेश पहुँचाया गया। जागरूकता गतिविधियों, प्रत्यक्ष संवाद और नुक्कड़ नाटक जैसे प्रभावी माध्यमों के जरिए नागरिकों को सुरक्षित व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय समपार जागरूकता दिवस-2026 का यह आयोजन वडोदरा मंडल की जनसुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता का सशक्त उदाहरण है। रेलवे का उद्देश्य केवल रेल संचालन तक सीमित नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक के जीवन की सुरक्षा व संरक्षा सुनिश्चित करना भी है। जनभागीदारी और जागरूकता के माध्यम से ही सुरक्षित रेलवे एवं सुरक्षित समाज का निर्माण संभव है।

लोकोमोटिव शेड साबरमती में "भगवद गीता के जीवन सूत्र" विषय पर प्रेरणादायक व्याख्यान का आयोजन

अहमदाबाद : पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के लोकोमोटिव शेड साबरमती में आज "भगवद गीता के जीवन सूत्रः तनाव मुक्त जीवन, स्वस्थ मन और उत्पादक कार्यस्थल की ओर एक प्रेरणादायक यात्रा" विषय पर एक अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक व्याख्यान आयोजित किया गया। इस विशेष कार्यक्रम में साबरमती रेलवे अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. मनोजकुमार देव मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान वरिष्ठ मंडल मेकेनिकल इंजीनियर श्री सुमंत प्रसाद गुप्ता, सहायक मंडल यांत्रिक इंजीनियर तथा एसीएमटी की गरिमामयी उपस्थिति रही। इसके साथ ही, लोकोमोटिव शेड के सुपरवाइजरों एवं कर्मचारियों ने भी इस आयोजन में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

अपने मुख्य व्याख्यान में डॉ. मनोजकुमार देव ने भगवद गीता के शाश्वत जीवन मूल्यों एवं सिद्धांतों को दैनिक जीवन तथा आधुनिक कार्यस्थल की परिस्थितियों से जोड़ते हुए तनाव प्रबंधन, मानसिक संतुलन, सकारात्मक सोच तथा कार्यकुशलता बढ़ाने के महत्वपूर्ण सूत्र साझा किए। उन्होंने विस्तार से बताया कि गीता के संदेश न केवल व्यक्तिगत जीवन में शांति एवं संतुलन प्रदान करते हैं, बल्कि कार्यस्थल पर भी कर्मचारियों के बीच बेहतर प्रदर्शन, आपसी सामंजस्य एवं उत्पादकता को बढ़ावा देने में अत्यंत प्रभावी साबित होते हैं।

यह व्याख्यान उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए प्रेरणा, आत्मविकास तथा मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का एक उत्कृष्ट माध्यम सिद्ध हुआ।

ग्रीष्मावकाश–2026 में एसटी निगम द्वारा 19,200 एक्स्ट्रा ट्रिप का संचालन : राज्य के 9 .60 लाख यात्रियों ने की यात्रा

▸▸प्रधानमंत्री की अपील के परिणामस्वरूप गुजरात राज्य सड़क परिवहन निगम द्वारा संचालित बसों में यात्रा करने वाले यात्रियों की संख्या में प्रतिदिन 15,000 तक की वृद्धि दर्ज की गई

▸▸एसटी निगम द्वारा प्रतिदिन 33,000 ट्रिप्स द्वारा 27 लाख से अधिक यात्रियों को समय पर और सुरक्षित परिवहन सेवा प्रदान की जा रही है

गांधीनगर : गर्मी की छुट्टियों के दौरान यात्रियों की भारी भीड़ और आवागमन को ध्यान में रखते हुए यात्रियों को विभिन्न धार्मिक तथा पर्यटन स्थलों तक आने-जाने के लिए पर्याप्त परिवहन सुविधा उपलब्ध हो सके; इस उद्देश्य से उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के मार्गदर्शन में एसटी निगम द्वारा इस वर्ष लगभग 19,200 विशेष एक्स्ट्रा ट्रिप्स का संचालन किया गया। ग्रीष्मावकाश-2026 में 9.60 लाख यात्रियों ने इस सेवा का लाभ उठाया है।

एसटी निगम द्वारा अहमदाबाद, राजकोट, सूरत, वडोदरा और गोधरा जैसे जिलों तथा सोमनाथ, द्वारका, पावागढ़, शामलाजी और अंबाजी जैसे धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों के लिए एक्स्ट्रा ट्रिप्स का आयोजन किया गया था। राज्य के नागरिक सार्वजनिक सेवाओं का अधिकतम उपयोग करें और उनकी यात्रा अधिक सुविधाजनक बने; इस शुभ उद्देश्य के साथ सरकार द्वारा राज्य की परिवहन सेवाओं में वृद्धि करते हुए 300 नई बसों को तत्काल प्रभाव से जनता की सेवा में लगाया गया था। सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने की प्रधानमंत्री की अपील के परिणामस्वरूप गुजरात राज्य सड़क परिवहन निगम द्वारा संचालित बसों में यात्रा करने वाले यात्रियों की संख्या में प्रतिदिन 15,000 तक की वृद्धि हुई है। उल्लेखनीय है कि; वर्तमान में गुजरात राज्य सड़क परिवहन निगम द्वारा प्रतिदिन 7,000 से अधिक शेड्यूल और 33,000 ट्रिपों के माध्यम से लगभग 33 लाख किलोमीटर का सफल संचालन किया जा रहा है। इसके माध्यम से प्रतिदिन 27 लाख से अधिक यात्रियों को समय पर और सुरक्षित परिवहन सेवा उपलब्ध कराई जा रही है। नागरिकों की सुख - सुविधा के लिए संचालित ये नई बसें राज्य के सभी प्रमुख केंद्रों जैसे अहमदाबाद, गांधीनगर, वडोदरा, सूरत, राजकोट, भावनगर, जूनागढ, जामनगर, महेसाणा, पालनपुर, अंबाजी, पादरा, डभोई, झालोद, संतरामपुर, गोधरा, दाहोद, अमरेली, बगसरा, भुज, सावरकुंडला, अंजार, पोरबंदर, लुणावाडा, छोटाउदेपुर, बोटाद, मोरबी, हिम्मतनगर, मोडासा, नवसारी, थराद, डीसा, नडियाद, अंकलेश्वर, प्रांतिज जैसे विभिन्न शहरी क्षेत्रों तथा दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में सफलतापूर्वक संचालित की जा रही हैं।

अहमदाबाद रेलवे स्टेशन पर अत्याधुनिक डिजिटल लगेज लॉकर सुविधा का शुभारंभ, यात्रियों को मिलेगा सुरक्षित, स्मार्ट एवं कैशलेस सामान भंडारण का विकल्प

यात्रियों को आधुनिक, सुरक्षित एवं विश्वस्तरीय डिजिटल सुविधाएँ उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल द्वारा अहमदाबाद रेलवे स्टेशन पर अत्याधुनिक 'डिजिटल लगेज लॉकर सुविधा' का शुभारंभ किया गया। इस नई सुविधा का उद्घाटन माननीय सांसद श्री दिनेशभाई मकवाना द्वारा किया गया।

इस अवसर पर सांसद श्री दिनेशभाई मकवाना ने कहा कि यह स्वचालित डिजिटल लगेज लॉकर सुविधा यात्रियों को शहर भ्रमण अथवा अन्य कार्यों के दौरान अपने सामान को सुरक्षित रखने में सहायक सिद्ध होगी। यात्री बिना किसी कर्मचारी की सहायता के अपने मोबाइल फोन के माध्यम से लॉकर का संचालन कर सकेंगे।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक, अहमदाबाद श्री वेद प्रकाश ने कहा कि अहमदाबाद के कालूपुर रेलवे स्टेशन, अर्थात् अहमदाबाद स्टेशन पर पहली बार यात्रियों के लिए डिजिटल लॉकर सुविधा शुरू की गई है। बाहर से आने वाले यात्रियों के पास अक्सर सामान और मूल्यवान वस्तुएँ होती हैं। कई बार उन्हें केवल सामान सुरक्षित रखने के लिए होटल लेना पड़ता है या यदि उन्हें तीन-चार या छह घंटे के लिए किसी कार्यालय या अन्य कार्यस्थल पर जाना हो, तो सामान साथ लेकर जाना असुविधाजनक होता है।

इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए यह सुविधा शुरू की गई है। यहाँ कुल 59 लॉकर उपलब्ध हैं, जिनमें छोटे, मध्यम और बड़े आकार के लॉकर शामिल हैं। इनके शुल्क भी किफायती रखे गए हैं। 3 घंटे, 6 घंटे तथा 24 घंटे के लिए अलग-अलग दरें निर्धारित की गई हैं। मात्र 40 से प्रारंभ होने वाली यह सुविधा यात्रियों को तकनीक के माध्यम से सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। यात्री स्वयं भी स्वचालित प्रणाली के माध्यम से लॉकर बुक कर सकते हैं। सहायता के लिए कर्मचारियों की भी व्यवस्था की गई है। यात्री आसानी से अपना सामान सुरक्षित रखकर अपने कार्यों के लिए जा सकते हैं।

अब अगले चरण में इसी प्रकार की सुविधाएँ साबरमती स्टेशन पर भी विकसित की जाएँगी। वहाँ यात्रियों के लिए फ्रेश होने, भोजन करने और कार्य करने जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई जाएँगी। यात्री अपना सामान लॉकर में सुरक्षित रखकर अपना काम कर सकेंगे, दस्तावेज तैयार कर सकेंगे, उनकी प्रिंटिंग कर सकेंगे और आवश्यक कार्य पूरा करने के बाद वापस आकर अपना सामान लेकर अपने गंतव्य के लिए रवाना हो सकेंगे। यह हमारा पहला प्रयास है। इसकी सफलता के आधार पर आगे के चरणों में यात्रियों के लिए और अधिक सुविधाएँ विकसित की जाएँगी। यात्री दो-तीन घंटे आराम भी कर सकेंगे, बाहर जाकर अपना कार्य कर सकेंगे और फिर वापस आकर आसानी से यात्रा जारी रख सकेंगे।

डिजिटल लगेज लॉकर की प्रमुख विशेषताएँ

वर्तमान में प्रथम चरण के अंतर्गत अहमदाबाद स्टेशन पर कुल 59 अत्याधुनिक लॉकर उपलब्ध कराए गए हैं, जिन्हें यात्रियों की आवश्यकताओं के अनुसार तीन श्रेणियों—मीडियम, लार्ज तथा एक्स्ट्रा लार्ज में विभाजित किया गया है। यह सुविधा यात्रियों के लिए चौबीसों घंटे एवं सप्ताह के सातों दिन (24×7) उपलब्ध रहेगी। इस प्रणाली में निम्नलिखित आधुनिक एवं सुरक्षा संबंधी विशेषताएँ शामिल हैं—

पूर्णतः डिजिटल एवं कैशलेस भुगतानः सुरक्षित लेनदेन को बढ़ावा देने के लिए यूपीआई (UPI), डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड तथा अन्य डिजिटल माध्यमों से भुगतान की सुविधा उपलब्ध कराई गई है।

ओटीपी (OTP) आधारित एक्सेसः लॉकर के संचालन हेतु यात्री के पंजीकृत मोबाइल नंबर पर वन-टाइम पासवर्ड भेजा जाएगा, जिससे अनधिकृत पहुँच पूरी तरह प्रतिबंधित रहेगी।

मजबूत सुरक्षा व्यवस्थाः सभी लॉकर मजबूत एवं छेड़छाड़-रोधी (Tamper-proof) संरचना से निर्मित हैं। इनकी निगरानी क्लाउड-आधारित प्रणाली के माध्यम से की जाएगी तथा निर्बाध विद्युत आपूर्ति (UPS) बैकअप की सुविधा भी उपलब्ध है।

बहुभाषीय इंटरफेसः देश के विभिन्न भागों से आने वाले यात्रियों की सुविधा के लिए डिजिटल स्क्रीन पर बहुभाषीय इंटरफेस उपलब्ध कराया गया है, जिसे यात्री स्वयं (Self-operated) आसानी से संचालित कर सकते हैं।

लॉकर शुल्क

लॉकर का आकार	3 घंटे तक	6 घंटे तक	24 घंटे तक
मीडियम	40	70	150
लार्ज	70	150	200
एक्स्ट्रा लार्ज	90	170	280

इस आधुनिक सुविधा का संचालन एवं रखरखाव ई-नीलामी प्रक्रिया के माध्यम से मैसर्स ड्यूरोल्ट टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड, पुणे को सौंपा गया है। पाँच वर्ष की अवधि के लिए किया गया यह अनुबंध 25 फरवरी 2031 तक प्रभावी रहेगा। इसके अंतर्गत रेलवे को प्रतिवर्ष 8,21,350 का लाइसेंस शुल्क प्राप्त होगा तथा अनुबंध अवधि के दौरान लगभग 48.46 लाख के राजस्व की प्राप्ति होगी।

अहमदाबाद रेलवे स्टेशन पर स्मार्ट डिजिटल लगेज लॉकर सुविधा का शुभारंभ भारतीय रेल एवं पश्चिम रेलवे की यात्रियों को आधुनिक, सुरक्षित तथा तकनीक आधारित यात्रा अनुभव उपलब्ध कराने की प्रतिबद्धता का एक और सशक्त उदाहरण है।

शिक्षा व्यवस्था पर जवाबदेही की मांग तेज, देशव्यापी आंदोलन की तैयारी में कॉकरोच जनता पार्टी

पुणे। देश की शिक्षा और परीक्षा व्यवस्था को लेकर बढ़ती चिंताओं के बीच कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) ने केंद्र सरकार और शिक्षा मंत्रालय के खिलाफ बड़ा आंदोलन छेड़ने का ऐलान किया है। पार्टी ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर देशभर में चरणबद्ध विरोध प्रदर्शन शुरू करने की घोषणा की है। संगठन का कहना है कि विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं और भर्ती प्रक्रियाओं में सामने आई कथित अनियमितताओं ने करोड़ों छात्रों, अभिभावकों और परिवारों का भरोसा कमजोर किया है। ऐसे में केवल जांच या आश्वासन से काम नहीं चलेगा, बल्कि जवाबदेही तय करना भी आवश्यक है।

पार्टी द्वारा जारी बयान के अनुसार आंदोलन की शुरुआत पुणे से की जाएगी, जहां आज बड़े स्तर पर विरोध प्रदर्शन आयोजित किया जाएगा। इसके बाद आंदोलन को राष्ट्रीय स्वरूप देते हुए देश के विभिन्न प्रमुख शहरों तक पहुंचाया जाएगा। पार्टी ने बताया कि पुणे के बाद लखनऊ, अमृतसर, बेंगलुरु, जयपुर और हैदराबाद सहित कई बड़े शहरों में प्रदर्शन किए जाएंगे। संगठन का दावा है कि इन कार्यक्रमों में छात्र, अभिभावक, युवा संगठन और विभिन्न सामाजिक समूह भी शामिल हो सकते हैं।

कॉकरोच जनता पार्टी का कहना है कि पिछले कुछ वर्षों में देश में आयोजित कई महत्वपूर्ण परीक्षाओं को लेकर विवाद सामने आए हैं। प्रश्नपत्र लीक होने के आरोप, परीक्षा आयोजन में तकनीकी गड़बड़ियां, परिणामों को लेकर उठे सवाल और भर्ती प्रक्रियाओं में देरी जैसे मुद्दों ने लाखों युवाओं को मानसिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से प्रभावित किया है। पार्टी के अनुसार, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले अनेक छात्र वर्षों तक कठिन परिश्रम करते हैं, लेकिन जब परीक्षा प्रणाली की निष्पक्षता पर ही प्रश्न उठने लगते हैं तो उनकी मेहनत और उम्मीदों को गहरा आघात पहुंचता है। संगठन का आरोप है कि इन घटनाओं के बावजूद शिक्षा मंत्रालय की ओर से अपेक्षित स्तर पर जवाबदेही नहीं दिखाई गई। पार्टी नेताओं का कहना है कि किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में मंत्री केवल योजनाओं की सफलता का श्रेय लेने के लिए नहीं होते, बल्कि व्यवस्थागत विफलताओं की नैतिक जिम्मेदारी भी उन्हें ही लेनी चाहिए। इसी आधार पर संगठन लगातार केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग कर रहा है। सीजेपी ने चेतावनी दी है कि यदि सरकार उनकी मांगों पर सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं देती है और जिम्मेदारी तय नहीं की जाती, तो 20 जून से नई दिल्ली स्थित जंतर-मंतर पर अनिश्चितकालीन शांतिपूर्ण धरना शुरू किया जाएगा। पार्टी का कहना है कि यह धरना केवल प्रतीकात्मक विरोध नहीं होगा, बल्कि तब तक जारी रहेगा जब तक परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता और जवाबदेही को लेकर ठोस कदम नहीं उठाए जाते। संगठन ने दावा किया है कि देश के विभिन्न राज्यों से छात्र और समर्थक इस आंदोलन में शामिल होने के लिए दिल्ली पहुंच सकते हैं। पार्टी नेताओं का कहना है कि यह आंदोलन किसी राजनीतिक लाभ के लिए नहीं, बल्कि युवाओं के भविष्य की रक्षा के लिए किया जा रहा है। उनके अनुसार, आज देश का एक बड़ा वर्ग प्रतियोगी परीक्षाओं और सरकारी नौकरियों की तैयारी में अपना महत्वपूर्ण समय और संसाधन लगा रहा है। ऐसे में यदि परीक्षा व्यवस्था की विश्वसनीयता कमजोर होती है तो इसका असर केवल एक परीक्षा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरे समाज में निराशा और अविश्वास का माहौल पैदा होता है। सीजेपी ने अपने बयान में कहा कि लाखों परिवार अपने बच्चों की पढ़ाई और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी पर बड़ी रकम खर्च करते हैं। कई छात्र दूर-दराज के गांवों और छोटे कस्बों से शहरों में आकर वर्षों तक तैयारी करते हैं। जब परीक्षा संबंधी विवाद सामने आते हैं तो इसका सबसे अधिक नुकसान इन्हीं छात्रों और उनके परिवारों को उठाना पड़ता है। पार्टी का कहना है कि युवाओं के सपनों और संघर्षों को राजनीतिक या प्रशासनिक लापरवाही की भेंट नहीं चढ़ने दिया जा सकता। आंदोलन के आगामी चरणों की जानकारी देते हुए पार्टी ने कहा कि विभिन्न शहरों में आयोजित होने वाले प्रदर्शन केवल विरोध तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि वहां छात्रों और अभिभावकों से संवाद भी किया जाएगा। संगठन परीक्षा सुधार, भर्ती प्रक्रिया में पारदर्शिता, समयबद्ध परिणाम, तकनीकी सुरक्षा व्यवस्था और जवाबदेही सुनिश्चित करने जैसे मुद्दों पर भी जनमत तैयार करेगा। इसके लिए स्थानीय स्तर पर बैठकों, जनसभाओं और जागरूकता अभियानों का आयोजन किया जाएगा।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि शिक्षा और रोजगार से जुड़े मुद्दे हमेशा से युवाओं के बीच संवेदनशील रहे हैं। देश की बड़ी आबादी युवा वर्ग की है और प्रतियोगी परीक्षाओं से करोड़ों लोगों का भविष्य जुड़ा हुआ है। ऐसे में परीक्षा व्यवस्था को लेकर उठने वाले सवाल अक्सर व्यापक जनचर्चा का विषय बन जाते हैं। कॉकरोच जनता पार्टी का यह आंदोलन भी इसी पृष्ठभूमि में महत्वपूर्ण माना जा रहा है। फिलहाल पुणे से शुरू होने वाले इस अभियान पर सभी की नजरें टिकी हुई हैं। यह देखना दिलचस्प होगा कि विभिन्न शहरों में होने वाले प्रदर्शन कितनी जनभागीदारी जुटा पाते हैं और सरकार तथा संबंधित मंत्रालय की ओर से इस पर क्या प्रतिक्रिया आती है।